❖ ओ३म् ❖

आर्ष-ज्योतिः

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष-महाविद्यालय-न्यास

का

द्विभाषीय मासिक मुखपत्र

कार्तिक-मार्गशीर्षमासः, विक्रम संवत् - २०७३

वर्ष : ८ अंक : १०१ नवम्बर : २०१६ मूल्य : ५.०० रुपये

ज्योतिष्कृणोति सूनरी

संरक्षक - संस्थापक

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

❖

परामर्शदाता

डॉ. रघुवीर वेदालङ्कार

❖

मुख्य सम्पादक

डॉ. धनञ्जय आर्य (अवैतनिक)

❖

सम्पादक

चन्द्रभूषण आर्य

डॉ. रवीन्द्र आर्य

❖

कार्यकारी सम्पादक

ब्र. शिवदेव आर्य

❖

व्यवस्थापक

ब्र. अनुदीप आर्य

ब्र. कैलाश आर्य

❖

कार्यालय

श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल

दून वाटिका-२, पौंधा, देहरादून (उत्तराखण्ड)

जंगमवाणी -९४१११०६१०४,८८१०००५०९६

ई-मेल : arsh.jyoti@yahoo.in

website: www.pranawanand.org

सदस्यता शुल्क

आजीवन - १०००.०० रुपये

वार्षिक - ५०.०० रुपये/ एक प्रति - ५ रुपये

विषय-क्रमणिका

विषयः	पृष्ठः
सम्पादकीय	२
श्लाघनीय व्यक्तित्व के धनी : प्रो. धर्मवीर	४
भीमसेनसुतो महान्	५
गतशताब्दि के उत्तरार्द्ध का एक...	६
वेद, ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज को...	८
प्रो. धर्मवीर जी एक संस्मरण	१४
धर्मवीर जी यूँ जाना...	१६
आर्य समाज के नियमों की व्याख्या	१७
राष्ट्र को समर्पित महान्..	२०
आर्य समाज के पुरोधा...	२३
हमारे प्रेरणास्रोत - प्रो. धर्मवीर जी	२४
वैदिक सिद्धान्तशिरोमणी - डॉ. धर्मवीर	२६
सजग धर्म प्रहरी : डॉ. धर्मवीर	२८
हमारे प्रेरणास्रोत - प्रो. धर्मवीर जी	३०
सामान्यज्ञान-दर्पणम्	३२

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

सम्पादक की कलम से...

विनम्र श्रद्धाञ्जलि

कालः पचति भूतानी कालः संहते प्रजाः।
कालः सुप्तेषु जागर्ति कालो हि दुरतिक्रमः॥

काल ही सब प्राणियों को बड़ा करता है, काल ही समस्त प्रजा का संहार करता है। सोते हुओं में काल जागता रहता है। काल का अतिक्रमण बड़ा कठिन है। काल से कोई बच नहीं सकता। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान्, सिद्धन्तशिरोमणी, आर्ष परम्परा के संवाहक, महर्षि दयानन्द के मानसपुत्र, श्रीमती परोपकारिणी सभा के यशस्वी प्रधान प्रो. धर्मवीर जी काल के वश वसीभूत होकर पञ्चभौतिक देह को छोड़ हमसे विदा हो गये, ऐसे अप्रत्याशित निधन से आर्यसमाज की अपूर्णनीय क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति होना निकट भविष्य में सहज रूप में सम्भव नहीं है। समूचा आर्यजगत इस क्षति से शोकसागर में संलिप्त है। काल किसी को नहीं छोड़ता, यह सब काल का ही क्रियाकलाप है।

'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च' उत्पन्न होने वाले की मृत्यु निश्चित है और मरने वाले का जन्म होना भी निश्चित है, क्योंकि दुनिया में ये दोनों साथ-साथ चलते हैं। संयोग के बाद वियोग का उदय होता है। यह परमेश्वर की परमव्यवस्था का रूप है। इससे निर्धन से लेकर चक्रवर्ती सम्राट् पर्यन्त, अनाथ से लेकर महासनाथ बलवान् पर्यन्त और निर्धन से बड़े-से बड़े धनवान् पर्यन्त जो भी इस सृष्टि में उत्पन्न हुआ है, वह काल के गाल में अवश्य ही गया है। इसीलिए यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में कहा गया है कि -

वायुनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम्।
ओ३म् क्रतो स्मर। कृतं स्मर। क्लिबे स्मर॥

किसी भी व्यक्ति के चरित्र को देखते समय प्रमुखरूप से व्यक्तित्व पर विशेष ध्यान दिया जाता है। व्यक्तित्व बहुत ही व्यापक शब्द है, जिसमें व्यक्ति का बाह्य तथा आन्तरिक स्वरूप संलग्न होता है। उसके द्वारा सम्पादित कार्य और उसके परिणाम, प्रतिष्ठा, यश आदि सभी सन्निहित होते हैं। व्यक्ति में जितनी अधिक कर्मठता एवं लगन होगी, उसके व्यक्तित्व में उतनी ही अधिक प्रबलता होगी। इतिहास साक्षी है कि इस धरा पर मानवोत्पति से लेकर आज पर्यन्त अनेक महापुरुषों, लेखकों, चिन्तकों, मनीषियों आदि ने अपने विलक्षण कर्तव्यों के कारण अपने यशःशरीर को हम सब की स्मृति में आज भी चिरस्थायी रूप दिया हुआ हैं।

प्रो. धर्मवीर की स्मृति आज भी मेरे अन्तःकरण को झकझोर रही है। नचिकेता के वह प्रश्न आज उदित हो रहे हैं कि मृत्यु के पश्चात् आत्मा का क्या होता है? कहाँ जाता है? शरीर के साथ ही मरता है या नहीं? इन्हीं प्रश्नों के बीच यह पद्यांश मन में विचरण करता है कि **'धर्मानुगो गच्छति जीव एकः'** अकेला जीव ही धर्मानुसार चलने वाला निःश्रेयस् सिद्धकर श्रेय मार्ग का योग्य पथिक बन देवयान से निरन्तर चलता हुआ विद्या को जानता है और **'अमृतत्वं भजते'** ये भाव अग्निदेव की लपटों के

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

साथ निरन्तर बढ़ते गये। शोकजन्य अश्रुजल इन विचार के साथ अग्निलपटों से सूख गया, जैसे दृष्टि से स्पष्ट दिखने लगा वैसे ही विचारों व भावों से भी स्पष्ट लगने लगा कि ज्ञान साधना और परोपकार पुण्य यज्ञ में समय लगाना चाहिए अन्यथा मुक्ति कैसे प्राप्त होगी, यतोहि **'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः'** एतदर्थ अविद्या के विपरीत विद्या की प्राप्ति हेतु सतत् प्रयास होने चाहिए, क्योंकि **'सा विद्या या विमुक्तये'** । प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करते हुए ही आगे चलते रहना ही जीवन है जब तक जीवन है तो क्यों निष्क्रिय रहें? यह तो केवल प्रभु ही जानता है। मानव उसे नहीं जानता कि जीवन कब तक है।

'को हि जानाति कस्य मृत्युकालो भविष्यति' इसको ध्यान में रखकर जीवन में आत्मश्रेयस् के लिए यत्नवान् रहना आवश्यक है। जब तक यह साधनभूत शरीर, इन्द्रियों का सामर्थ्य है एवं आयु के कुछ क्षण बचे हैं तब तक नैरन्तर्य पूर्वक आत्मकाल्याण के लिए लगे रहना ही ठीक है।

प्रो. धर्मवीर जी ने आर्ष परम्परा को सम्पूर्ण जीवन साकार रूप में जिया है। श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली तथा उसकी समस्त शाखा संस्थाओं में आपका आशीर्वाद प्राप्त होता रहा है। आपने अनेक वर्षों तक चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के ब्रह्मत्व को स्वीकार किया तथा ज्ञानपिपासु श्रोताओं को ज्ञानराशि से आप्लावित किया। विषम परिस्थितियों में श्रीकृष्ण रुप बनकर गुरुकुल एवं आर्यसमाज का मार्गदर्शन किया। **'आर्य समाज में प्रो. धर्मवीर जी चलता-फिरता पुस्तकालय थे।'** गुरुकुल आपका सदैव ऋणी रहेगा।

सहृदयपाठकवृन्द! आर्यजगत् के पुरानी पीढ़ी के विद्वान् एक-एक करके जा रहे हैं, उस अपूरणीय क्षति को पूरा करना कठिन तो है परन्तु असम्भव नहीं, यदि हम पवित्र विचारों को अपनाते हुए महर्षि दयानन्द के आर्षभावों को स्वीकार करें।

हे दयानन्द के मानसपुत्र! तुम्हें विनम्र श्रद्धाञ्जलि...

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
एवं
समस्त आर्ष-न्यास

अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह

मानव सेवा प्रतिष्ठान ६० बी, हुमायूँपुर, नई दिल्ली-२९ द्वारा दिनाङ्क १३ नवम्बर २०१६ को अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह छोटु राम धर्मशाला (पार्क) सिविल रोड छोटु राम चौक, रोहतक (हरयाणा) में आयोजित किया जा रहा है।

मानव सेवा प्रतिष्ठान प्रतिवर्ष निर्धन एवं मेधावी छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान कर उत्साहवर्द्धन करता है तथा समाज सेवा में समर्पित विद्वान्-विदुषियों एवं सामाजिक कार्यकर्त्ताओं का अभिनन्दन करता है। इस वर्ष भी अनेक मेधावी छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही हैं तथा समाज को समर्पित विद्वान्-विदुषियों व कार्याकर्ताओं को सम्मानित किया जा रहा है।

आप अपने समस्त परिवार तथा इष्ट मित्रों सहित उपस्थित हो कार्यक्रम की शोभा बढ़ायें।

- **रामपाल** (कार्यकर्ता प्रधान)

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

श्लाघनीय व्यक्तित्व के धनी : प्रो. धर्मवीर

❑ डॉ. रघुवीर वेदालंकार...✍

परोपकारिणी सभा को उत्कर्ष पर पहुँचाने वाले उसके प्रधान प्रो. धर्मवीर जी हमसे बिछुड़ गये। विधि का विधान ऐसा ही था। अभी उनमें कार्य करने की पर्याप्त शक्ति, स्फूर्ति, सामर्थ्य था। जीवित रहते तो वो अन्य भी अनेक स्मरणीय कार्य कर जाते किन्तु....

कः कं शक्त्यो रक्षितुं मृत्युकाले रज्जुच्छेदे के घटं धारयन्ति विधि के विधान को कोई भी नहीं टाल सकता। धर्मवीर जी आज न केवल सम्पूर्ण भारत अपितु विदेशी बन्धु परोपकारिणी के प्रधान, मन्त्री तथा 'परोपकारी' के सम्पादक के रूप में जाने जाते हैं। वे धर्मवीर जी के कार्यों तथा सम्पादकीय से ही परिचित हैं, उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व से नहीं, क्योंकि **सहवासी एव विजानाति चरितं सहवासिनाम्** (वा.रामा.) सहपाठी तथा सहवासी ही किसी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को जान सकता है। धर्मवीर जी हमारे सहपाठी थे। गुरुकुल झज्जर में हमारा उनका तथा अन्य ब्रह्मचारियों का खाना-पीना, सोना-जागना, पढ़ना-लिखना, खेलना-कूदना सब कुछ समान था। तभी से धर्मवीर जी में कुछ विशिष्ट गुण हमें दिखलायी देते थे। स्पष्ट वक्ता, किसी से भी न दबने-झुकने वाला अपने कार्य को दक्षतापूर्ण करने वाला ब्र. धर्मवीर हमारा सहपाठी था, जिसने अपने विशिष्ट गुणों के कारण अपनी पहचान आर्यजगत् तथा उससे बाहर भी बनायी।

धर्मवीर जी जन्म से तो ब्राह्मण थे ही किन्तु कार्य से भी वे सच्चे ब्राह्मण थे। धन के लोभ उन्हें स्पर्श ही नहीं कर पाया। ब्राह्मण को सत्यवादी, निर्भीक वक्ता, लेखक तथा समाज का पथप्रदर्शक होना चाहिए। धर्मवीर जी ऐसे ही थे। साथ ही उनमें क्षत्रिय के समान शौर्य, वीरत्व भी था। हम कह सकते हैं कि **'यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ परतः सह'** के मूर्त्तरूप डॉ. धर्मवीर जी थे।

आर्यसमाज उनके सांसों में रमा था। दिन-रात सोते-जागते आर्यसमाज का ही ध्यान। परोपकारिणी कैसे सर्वतोमुखी उन्नति कर सके, यही उनका लक्ष्य था तथा उन्होंने कुशलता के साथ प्राप्त भी किया। आर्यसमाज के लिए धर्मवीर जी ने अपने घर-वार, परिवार का भी ध्यान नहीं दिया। आर्यसमाज का कार्य उनके लिए सर्वोपरि था। इसके पक्ष में एक उदाहरण ही पर्याप्त होगा। अजमेर के दयानन्द कॉलेज से उन्हें केवल इसलिए अलग कर दिया गया कि वे आर्यसमाज का कार्य छोड़कर उन्हे अध्यापन तक सीमित रहने को कहा गया, किन्तु वह सामान्य व्यक्ति न था। वह तो ब्रह्म तथा क्षात्रतेज का सम्मिश्रण था। अतः अर्थिक संकट सहते हुए भी उन्होंने न तो क्षमा मांगी तथा न ही आर्यसमाज का कार्य छोड़ा।

धर्मवीर के कार्यों पर कहाँ तक प्रकाश डाला जाए। गुणों के साथ कोई न कोई दोष भी व्यक्ति में छिपा रहता है। धर्मवीर जी भी इसके अपवाद न थे। वे परले सिरे से हठी-जिद्दी व्यक्ति थे। हठ, जिद्द बुरे भी नहीं हैं। हठ यदि ठीक पक्ष के लिए है तो वह सत्याग्रह कहलाती है। सत्याग्रही व्यक्ति सत्य के लिए लड़ता है। यदि हठ केवल विरोध स्वरूप या केवल अपने कार्यों को उचित ठहराने के लिए है तो वह दुराग्रह है तथा दुराग्रह करने वाले तथा इससे समाज का भी अहित होता है। धर्मवीर जी को भी अपनी हठ के आगे अन्यों के विचारों की परवाह नहीं थी, उससे कुछ अनिष्ट भी हुआ किन्तु **एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणे विववांकः।** धर्मवीर जी महान् गुणों से ओत-प्रोत थे। वे अच्छे मित्र, स्पष्टवक्ता, कुशल लेखक तथा कर्मठ कार्यकर्त्ता

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

थे। इसके साथ पाण्डित्य के धनी तो वे थे ही। परोपकारिणी सभा के मन्त्री तथा प्रधान पद उन्होंने किसी की कृपा या जोड़-तोड से प्राप्त नहीं किये अपितु अपने गुणों, अपने कार्य के आधार पर प्राप्त करके उन्होंने **'स्वयमेव मृगेडते'** को ही सार्थक किया है।

जाना तो सभी को है किन्तु जिन परिस्थितियों में धर्मवीर जी गये, उससे विद्वानों, कार्यकत्ताओं के प्रति समाज की उपेक्षा स्पष्ट झलकती है। जिस समाज में वे प्रवचन दे रहे थे। वहाँ अस्वस्थ अवस्था में अकेले ही रेल में बिठा दिया गया। क्या उन लोगों का इतना कर्त्तव्य नहीं था कि एक विद्वान् तथा सभाप्रधान के साथ एक व्यक्ति उन्हें छोड़ने जाये। यदि ऐसा होता तो सम्भवत: यह अवस्था न होती कि रेल से उन्हें व्हीलचेयर पर उतारा गया और अन्त में वे हमसे बिछुड गये। क्या आर्यसमाज इस दिशा में सोचेगा कि विद्वानों का सत्कार तथा उनकी रक्षा कैसे की जाती है?

-पूर्व प्रोफेसर,
रामजस कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय

भीमसेनसुतो महान्

❑ **आचार्य यज्ञवीर...**✍

मातृभू के वीर पुत्र धैर्यधारी थे महान्,
वेदविद्या के प्रचारी थे बड़े ही बुद्धिमान्,
तर्क के वाचस्पति तुम सत्यवादी त्रिज समान,
पूज्य ओमानन्द के तुम शिष्यरत्न बड़े महान्,
वाग्मिता के थे धनी तुम आभा में सूर्य समान,
धर्मवीर महान् थे तुम ज्ञानी गुरुदत्त के समान॥
तर्क का खाण्डा घुमाया ओम् ध्वज ले हाथ में,
वेदधर्मप्रचार व्रत ले कार्यरत दिन रात में,
घोषणा की छोर घर घर सत्यजित् के साथ में,
ले दयानन्दर्षि गुरु की ज्ञानराशि हाथ में,
वेद का डंका बजाया कर दिया नूतन विहान,
धर्मवीर महान् थे तुम ज्ञानी गुरुदत्त के समान॥
पाखण्डियों को ही हराना मुख्य इनका काम था,
धैर्यधर्म धारण करना धीर को अभिराम था,
पोपगढ़ को ही गिराना वीर का प्रोगाम था,
वेदभाष्य शोध करना श्रेय था संग्राम था,
परोपकारिणी कार्यरत तुम कर गये कार्य महान्,
धर्मवीर महान् थे तुम ज्ञानी गुरुदत्त के समान॥
यज्ञविद्या के विवेकी प्रेमपारावार थे,
ज्ञजनों के तुम सुहृद् थे व्रतों पणप्राण थे,
वीतराग योगी से तुम दार्शनिकविद्वान थे,
रत्नगर्भामातृसुत तुम आर्यों का सम्मान थे,
शास्त्रीय चर्चा का तुमने किया नूतन वितान,
धर्मवीर महान थे तुम ज्ञानी गुरुदत्त के समान॥
वेद के प्रचार हेतु पिलखुवा में तुम गए,
क्रूरकीटाणुबिमारी के वहाँ कुछ अड़ गए,
शिक्षा सबको दी मुनासिब व्याधि से लड़ते हुए,
धर्म को घर ध्यान में गुरुमन्त्र को जपते हुए,
मरते समय तक धैर्यधर तुम कर रहे थे वेदगान,
धर्मवीर महान् थे तुम ज्ञानी गुरुदत्त के समान॥
अनपत्या होकर सभा मृतपूत पर रोने लगी,
धर्मपत्नी प्राण प्राणाधार पर खोने लगी,
शोक विह्वल साथियों की दुर्दशा होने लगी,
आर्य जनता वेदना से सिसक कर रोने लगी,
हाय बेटा! हाय स्वामी हा! धार्मिक नेता महान्,
धर्मवीर महान् थे तुम ज्ञानी गुरुदत्त के समान॥
क्रान्तिकारीपूत हे! लातूर व चाकूरकी शान।
भीमसेन सुतो महान्! भीमसेन सुतो महान्॥

-गुरुकुल पौन्धा,
देहरादून

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

गतशताब्दि के उत्तरार्द्ध का एक अद्भुत संस्मरण

❑ आचार्य यज्ञवीर...✍

भैम्यहं त्वञ्च भैमि भो! सुस्पर्धाह्यावयोर्भवेत्

अप्रैल 1960 में जब मैं बालमन में अनेक उमंग तरंगे संजोये हुए कुलभूमि गुरुकुल झज्जर में पहुंचा तो प्रवेश प्राप्ति हेतु मुख्याधिष्ठाता श्री वेदव्रत शास्त्री जी के कक्ष के बाहर नचिकेता की भांति अनेक प्रश्नों की उहापोह में व्यस्त बैठा था तब अन्दर से एक कोमलकान्तकृशकाय किशोर जो बड़े बड़े चक्षुचकोरों से जिज्ञासाभरी चकित दृष्टि से मुझे निहार रहा था, जिसका मुखमण्डल सस्मित चापल्यचारु था जिसके शिर के पिछले भाग में ग्रीवा से कमर की ओर नागिन सी काली चाणक्य शिखा लहरा रही थी। आवेदनपत्र आगे करते हुए कहने लगा आ तुम्हारा प्रवेश कर दूँ। आवेदन पत्र जमा कराके बोला - अरे भैमि! आ तुझे गुरुकुलदर्शन करा दूँ और आवास स्थान दिखा दूँ। उक्त सम्बोधन के अर्थ से अनभिज्ञ मैं तुनकर बोला मैं क्यों तू होगा भैमि यह सुनकर ठस्का मारकर हंसते हुए वह पूर्व लिखित श्लोकांश गाने लगा। मैं कोई उत्तर न देकर अपने गुस्से को अन्दर ही अन्दर समेट कर अपने सामान के साथ अपने नियत कक्ष में पहुँच गया। इस प्रकार नित्यकृत्य में उस सम्बोधन से मुझे चिड़ाना और मेरा चिड़ना भी सम्मिलित हो गया। और मैं बिना उत्तर दिये अपनी नाराजगी प्रकट करता रहा। यह देख एक दिन दीर्घभ्राता विरजानन्ददैवकरणि जी ने मुझे उस शब्द का अर्थ बताया और कहा यह भी भीमपुत्र और तुम भी भीमपुत्र, तब मैं दूर बैठे भ्राता श्री धर्मवीर को पुकार उठा अरे! भैमि! तब वे अट्टहास करते हुए मेरे पास आये और बोले सुस्पर्धा शुरु और बता मासिक मौन आज कैसे तोड़ा? **'विभूषणं मौनमपण्डितानाम्'** के अनुसार अब मैं मौन तोड़ रहा हूँ क्योंकि मैं अब उस शब्दार्थ का ज्ञाता हो गया हूँ। तदुपरान्त प्रायः खाली समय में प्रतिदिन उनकी सुस्पर्धा किसी न किसी शब्द या विषय पर अवश्य ही हुआ करती थी।

श्रावणी पर्व पर भावी नैष्ठिक दीक्षा की उन दिनों गुरुकुल की मुख्य चर्चा थी भ्राता श्री ने कहा क्या कर रहा है - भौमि आ सुस्पर्धा करें। मैंने कहा व्याकरण का पाठ याद कर लूँ, बाद में समय रहा तो होगी सुस्पर्धा, तभी वे तपाक से बोले अरे! ओ व्याकरण के लठ्ठ क्या ये सब सीधे ब्रह्मचर्याश्रम से काषायवस्त्र धारण कर रहे हैं, नैष्ठिक बन रहे हैं यह सब ठीक है ना? मेरे अनुसार आप ही कह रहे हैं - नैष्ठिक अर्थात् न+एष्+ठिक-नहीं यह ठीक है। वे बोले तीर चला तुक्का नहीं। तब मैंने कहा निष्ठा शब्द का अर्थ है 'विनाश' **निष्ठा अस्य अस्ति इति नैष्ठिकः** अर्थात् जिसका विनाश है वह नैष्ठिक है। वे बोले प्रमाण? मैंने कहा पाण्डवदूत श्री कृष्ण कौरवसभा में दुर्योधन को समझते हुए महाभारत में कहते हैं-

'निष्ठामापत्स्यते मूढ क्रुद्धे गाण्डीवधन्वनि' यहाँ स्पष्टार्थ है - गाण्डीवधारी अर्जुन के क्रुद्ध हो जाने पर हे दुर्योधन तेरा विनाश हो जायेगा। आज सुस्पर्धा में तुम आगे और तुम्हारी नई उपाधि - 'व्याकरण का लठ्ठ' प्रदान की जाती है और हँसते-हँसते भोजन करने चले गये। उसके बाद वे जब-जब मिले भैमि सम्बोधन छोड़कर इस नये शब्द से मुझे सम्बोधित करने लगे। इसप्रकार वे तर्क वितर्क करते रहते थे कभी खुद यास्क बनकर मुझे कौत्स बना निरुक्त के पक्ष विपक्ष पर लम्बी बहस किया करते, जो कि वाग्मिता बढ़ाने के लिए किसी का अपमान या विरोध करने के लिए नहीं थी। यह बात इन्द्रवेश जी के हंसने और बलदेव जी के क्रोधित होने पर उन्होंने स्पष्टीकरण में कही।

एक दिन रामायण पर सुस्पर्धा करते वे कहने लगे कि आज बाल्मीकि को आदि कवि स्वीकार किया

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

जाता है। अब इसके विपक्ष में विचार रख, मैंने बहुत सोचा फिर कहा **'पश्य देवस्य काव्यम्'** **'कविर्मनीषीपरिभू..'** आदि मन्त्रों में सिद्ध है आदि कवि परमेश्वर है और योगदर्शनकार भी उसे **'स: पूर्वेषामपि गुरु..'** कह कर आदि गुरु मानता है। अरे ओ! व्याकरण के लठ्ठ वैदिक साहित्य छोड़ लौकिक साहित्य में आदि कवि का कथन मेरा अभिप्राय था। मैने फिर कुछ सोचा और कहा गद्य भी काव्य है और कहा है **'गद्यं कवीनां निकषा वदन्ति'** गद्य ही कवियों की कसौटी है। ब्राह्मण ग्रन्थ आदि के लेखक आदि कवि होने चाहिए। तो वे कहने लगे अरे! वेद से सम्बद्ध साहित्य को छोड़ दीजिए भाई! बहुत सोचने पर मुझे एक प्रसङ्ग ध्यान आया और मैंने कहा रामायण ही अन्त: साक्ष्य से बता रही है कि महर्षि वाल्मीकि आदि कवि नहीं। कैसे? जब राम ने बाली को बाण से मृतप्राय: कर दिया तब बाली ने पूछा हे राम आपको सुग्रीव प्रिय क्यों हैं? और मैं अप्रिय? इस प्रश्न के उत्तर में महर्षि वाल्मीकि के ही शब्दों में राम का उत्तर देखिए –**'श्लोकौ द्वौ मनुना गीतौ श्रृणु चारित्र्यवत्सल:।'** कहकर मनु के दो श्लोक ज्यों के त्यों उद्धृत कर दिये हैं –

आततायिनमायान्तं हन्यादेवा विचारयन्।
प्रकाशं वाप्यप्रकाशं वा हन्तुर्दोषो न कश्चन:॥
अग्निदो गरदश्चैव शास्त्रपाणिधनापहा।
क्षेत्रदारहरश्चैव षडेते आततायिन:॥

नहीं, नहीं, यह तो धर्मशास्त्र है, काव्य ग्रन्थ नहीं और यह कहते हुए समाप्त किया।

ये उपरि लिखित बातें आज जब आचार्य धनञ्जय ने मुझे यह वज्रपातोपम दुर्दान्त समाचार सुनाया तब मैं हतप्रभ्र–सा कुटिया पर बैठा चिन्तामग्न हो गया और आचार्य जी अजमेर यात्रा का प्रबन्ध करने में व्यस्त हो गये। तो मुझे लगा कुटिया की छत पर कुछ रेखाचित्र उभर रहे हैं और उनका वह बालरूप मुझे टी.वी. स्क्रीन की भाँति उपरिलिखित संस्मरण याद दिला रहा है और डॉट रहा है अरे ओ! भैमि! व्याकरण के लठ्ठ! मैं तुझे हर वर्ष लेख भेजने और ऋषि मेले में आने हेतु पत्र भेजता रहा परन्तु तुम–सा ढीठ नहीं आया। गत वर्ष तो मैंने तुझे सम्मानित करने हेतु भी बुलाया पर तूने निर्लेप का ढोंग बना कर उसे भी स्वीकार नहीं किया। अरे! कल मेरा भौतिक शरीर भी **'भस्मान्तशरीरम्'** के रूप में परिवर्तित हो जायेगा जब भी शायद तू निष्ठुर नहीं आयेगा? इत्यादि विचारमाला मेघों की भाँति चित्र–विचित्र मुझे दिखते रहे और अविरल अश्रुधारा बह चली और मैं जोर से बोला धनञ्जय मेरा भी टिकट बनवाइये और अग्रिम प्रात:काल अजमेर जाकर जब भ्राता जी रहित उनके शरीर को शवरूप में दर्शन करने पहुँचा तो लगा चारुचंचलवाग्मिता से मुझे कुछ मौन सन्देश दे रहे हैं और कह रहे हैं अब बहुत देर हो गई, पहले आते तो बहुत–सा कार्य और हो जाता.... और अन्त में हम शवयात्रा के साथ स्वामी दयानन्द जी की दाहस्थल के नातिदूर उस दिव्य चिता को विह्वल और विवश देखते रहे और उस पवित्रात्मा को स्मरण व नमन करते हुए लुटे हुए व्यापारी की भाँति साश्रु नयनों से वापिस स्टेशन आकर गाड़ी में लेटकर उनकी स्मृतियों में खो और सो गये। अब पछताये क्या होता है जब चिड़िया चुग गयी खेत।

– गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

आर्ष–ज्योति के सहृदय पाठकों से...

सहृदय पाठकों! आर्ष–ज्योति पत्रिका का वर्ष २००८ से नियमित प्रकाशन हो रहा है। सभी पाठकों के पास मास की ८ दिनांक तक आर्ष–ज्योति प्रेषित की जाती है, किन्तु डॉक की अव्यवस्थाओं के कारण कुछ पाठकों को पत्रिका नहीं मिल पा रही है, इसके लिए हमें अत्यन्त खेद है। अत: आप सहृदय पाठकों से निवेदन है कि आपकी प्रिय पत्रिका 'आर्ष–ज्योति:' मास के १५ दिनांक तक अप्राप्ति की दशा में तुरन्तु सूचित करें तथा सही पते हेतु पत्र, ई–मेल या दूरभाष पर पंजीकरण संख्या (पं.सं.) सहित पूर्ण विवरण देवें, जिससे आपको पत्रिका प्रेषित करने में असुविधा न हो।

–कार्यकारी सम्पादक (आर्ष–ज्योति:) दूरभाष–८८१०००५०९६, ९४१११०६१०४

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

वेद, ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज को समर्पित एक प्रेरणादायक वरणीय जीवन : डॉ धर्मवीर

❑ मनमोहन कुमार आर्य...✍

ऋषि भक्त डा. धर्मवीर जी आर्यसमाज के बहुमुखी प्रतिभा के धनी शीर्षस्थ विद्वान थे। आप आर्यसमाज के प्रगल्भ वक्ता, प्रतिष्ठित लेखक, सम्पादक, पत्रकार, वेद-पारायण यज्ञों का ब्रह्मत्व करने वाले यज्ञ मर्मज्ञ, धर्मोपेदेशक, आर्यसमाज के प्रचारक, प्रभावशाली उपदेशक सहित भव्य व्यक्तित्व के धनी भी थे। परोपकारिणी सभा से आप अनेक दशकों से जुडे हुए थे और वर्तमान में इस प्रतिष्ठित सभा के प्रधान पद को सुशोभित एवं गौरवान्वित कर रहे थे। व्यवसाय की दृष्टि से आप दयानन्द कालेज, अजमेर के शिक्षक सहित अनेक दायित्वपूर्ण पदों पर कार्यरत रहे। माह सितम्बर-अक्तूबर, २०१६ के लगभग दस-बारह दिनों के अल्पकालिक रोग के बाद अचानक ६ अक्टूबर, २०१६ को आपकी मृत्यु हो गई। इस समाचार से सारा आर्यजगत स्तब्ध है। परोपकारिणी सभा, अजमेर से जुड़कर अपने कार्यकाल में आप इसे उन्नति के शिखर पर ले गये। सभा के ऋषि उद्यान में एक गुरुकुल व गोशाला की स्थापना व संचालन सहित आचार्य सत्यजित् आर्य, आचार्य सोमदेव जी, विष्वंड़ जी और आचार्य कर्मवीर जी जैसे उच्चकोटि के ऋषिभक्त विद्वानों को अध्ययन व अध्यापन आदि की अपनी गतिविधियां संचालित करने का आपने सुअवसर प्रदान किया। आपके चले जाने से आर्यसमाज में जो रिक्तता आई है, उसकी पूर्ति होना सम्भव नहीं दीखता। यह आर्यसमाज एवं डा. धर्मवीर जी के परिवार की एक ऐसी क्षति है जिसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। आर्यसमाज का शायद यह इतिहास ही रहा है कि ऋषि दयानन्द सहित इसके प्रमुख विद्वान पं. लेखराम जी, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी श्रद्धानन्द, महाशय राजपाल आदि अचानक ही मृत्यु का ग्रास बने।

डा. धर्मवीर जी का जन्म २० अगस्त सन् १९४६ को पं. भीमसेन आर्य के घर उद्गीर महाराष्ट्र में हुआ था। आपके पिता दृढ़ आर्यसमाजी, कवि एवं स्वतन्त्रता सेनानी थे। धर्मवीर जी को १० वर्ष की आयु में गुरुकुल झज्जर में प्रविष्ट कराया गया। व्याकरणाचार्य की उपाधि ग्रहण करने के बाद आप आगे अध्ययन के लिए गुरुकुल कांगड़ी चले आये। यहां आयुर्वेद महाविद्यालय में अध्ययन करके बी. ए.एम.एस. की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद संस्कृतव्याकरण और साहित्य में अधिक रुचि होने के कारण एम.ए. संस्कृत में प्रवेश लिया। आपने यह परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। डा. धर्मवीर जी हंसमुख, विनोदी, सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। सन् १९७४ में आप दयानन्द कालेज, अजमेर में संस्कृत के प्राध्यापक नियुक्त हुए। कुछ वर्ष बाद अध्यापन के साथ-साथ आपने पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ में दयानन्द शोधपीठ से डा. भवानीलाल भारतीय के निर्देशन में पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। सन् १९७५ में दयानन्द संस्थान के संस्थापक और संचालक पंडित भारतेन्द्र नाथ जी (महात्मा वेदभिक्षु जी) की ज्येष्ठ पुत्री ज्योत्सना जी के साथ आपका विवाह हुआ। नोबेल पुरस्कार प्राप्त श्री कैलाश सत्यार्थी जी आपके रिश्ते में साढू हैं। सन्तान के रूप में आपको सुयश, सुवर्या और निमिषा नाम की तीन संस्कारवती पुत्रियां प्राप्त हुईं। डा. धर्मवीर जी का एक संकल्प था-वे बचपन से ही अपनी तीनों पुत्रियों से केवल संस्कृत में बात करते थे। इस संकल्प का उन्होंने आजीवन निर्वाह किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी संस्था परोपकारिणी सभा के साथ वह आज से चालीस वर्ष पहले जुड़े थे। आपने इस प्रतिष्ठित सभा के सदस्य, उपमंत्री, संयुक्त मंत्री, मंत्री, कार्यकारी प्रधान और प्रधान

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

रहकर अपनी बहुमूल्य सेवायें प्रदान कीं। सत्यनिष्ठा, परिश्रम, लग्नशीलता, कर्मठता, निस्वार्थभाव, निष्कामता, धैर्य और समर्पण के भाव आपके जीवन के आधारस्तम्भ व मूलमंत्र थे जिन्होंने आपके जीवन व व्यक्तित्व को समूचे आर्यजगत का प्रिय बनाया। परोपकारिणी सभा के मंत्री के रुप में आपने जब कार्यभार संभाला था तब ऋषि उद्यान में भवन के नाम पर केवल एक सरस्वती भवन था। उसके बाद आपने उद्यान परिसर में कई मंजिलों वाले अनेक भव्य भवनों का निर्माण कराया। ऋषि उद्यान में गुरुकुल एवं गोशाला का श्रीगणेश किया। विरक्त साधु-संन्यासियों और ब्रह्मचारियों को निःशुल्क रहने की सुविधा प्रदान की। यहां ऐसे अनेक विद्वान आचार्य रहते हैं, जो वेद और आर्यसमाज के प्रचार कार्य को देश और विदेश में लगातार गति प्रदान कर रहे हैं। आपने प्रकाशन के काम में विशेष गति प्रदान की। परोपकारिणी सभा के माध्यम से महर्षि दयानन्द के ऋग्वेदभाष्य और यजुर्वेद भाष्य सहित अन्य सभी ग्रन्थों, इतर वेदभाष्य एवं अनेक वैदिक ग्रन्थों का प्रकाशन भी पर्याप्त संख्या में कराया है। आस्था टीवी चैनल के माध्यम से भी डा. धर्मवीर जी के सैद्धान्तिक, शास्त्रीय और धार्मिक प्रवचनों का प्रसारण लम्बे समय तक होता रहा है। आप परोपकारी पत्रिका के तीस वर्षों से भी अधिक समय से अवैतनिक सम्पादक रहे। जब आपने इसका कार्यभार सम्भाला था तो इसकी प्रसार संख्या ४०० से ५०० के बीच थी और अब लगभग पन्द्रह हजार की संख्या में इसे पाक्षिक रूप से प्रकाशित किया जा जाता है। इन उन्नतियों का मुख्य श्रेय आपके संकल्पों, निर्णयों व कार्यों को ही है। डा. धर्मवीर जी का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली था। आपकी वाणी मधुर, मोहक, शुद्ध, स्पष्ट और ओजस्वी थी। आपका परिधान सादा, सुन्दर और उज्ज्वल होता था। आप श्वेत धोती कुर्ता पहनने का संकल्प लिए हुए थे। प्रखर वक्ता थे। आप निर्भीक और ओजस्वी लेखक और पत्रकार थे। आपका जीवन महर्षि दयानन्द, वेद और आर्य समाज के लिए समर्पित था। स्वार्थ आपको छू तक नहीं सका था और परार्थ अपका लक्ष्य था। मानवता के आप सच्चे उपासक थे।

धर्मवीर जी ने आर्यसमाज की विचारधारा का अपने निजी जीवन में भी पूरा-पूरा पालन किया। आपने अपनी तीनों पुत्रियों के विवाह जाति बन्धन तोड़कर किये। इस पर टिप्पणी करते हुए आर्य विद्वान् प्रा. जिज्ञासु जी कहते हैं कि अपनी सन्तानों के विवाह जाति बन्धन तोड़कर करने की बात करना सरल परन्तु विवाह करना कठिन है। डा. धर्मवीर जी जातिवाद, प्रान्तवाद की सोच से बहुत ऊपर थे। निडरता व ऋषि दयानन्द जी के व्यक्तित्व के प्रायः सभी गुण आपको बपौती से प्राप्त हुए थे। आपके पिता श्री पं. भीमसेन जी की सत्यवादिता व धर्मनिष्ठा को मराठवाड़ा के सब आर्य जानते व मानते थे।

आज डा. धर्मवीर जी हमारे मध्य में नहीं है। वह इस मर्त्यलोक से जा चुके हैं तथापि उनके कार्य और लिखित साहित्य तथा आडियो व वीडियो सुरक्षित व उपलब्ध हैं जो वर्तमान व भविष्य में आर्यों का मार्गदर्शन कर सकते हैं व करेंगे। हमें आशा है कि निकट भविष्य में उनके जीवन व कार्यों पर कुछ पठनीय पुस्तकों का प्रकाशन होगा। कई आर्य पत्रिकायें उन पर विशेषांक भी प्रकाशित कर रही हैं। हमें यदा-कदा इस समस्त सामग्री का अवलोकन व अध्ययन करते रहना चाहिये। हमें लगता है कि वर्तमान में जो लोग उनके सम्पर्क में आये हैं, वह तो उन्हें याद रखेंगे ही।

मृत्यु के पूर्व वह किसी से संवाद नहीं कर सके। डाक्टरो को हाथ से संकेत करते हुए उन्हें धैर्य रखने की प्रेरणा करते रहे। डा. धर्मवीर जी ने जो शास्त्रीय वचन आदि कण्ठाग्र कर रखे थे, उसका वह चलते-फिरते व यात्रा आदि करते हुए पारायण करते रहते थे। मृत्यु से पूर्व देह-त्याग के समय तक वह कुछ बड़बड़ाते रहे। रेलयात्रा के बाद अस्पताल जाते समय कह रहे थे **'ले चलो हमें दयानन्द के स्थान पर'**। स्टेशन से ऋषि उद्यान लाते समय भी सेवकों को यही कहते थे **'मुझे ऋषि उद्यान नहीं, श्मशान ले चलो।'** मृत्यु के बाद उनका दाहकर्म

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

उसी स्थान पर किया गया जहां महर्षि दयानन्द जी का किया गया था।

डा. धर्मवीर जी पुरुषार्थ व परमार्थ के पुतले थे। उनका जीवन अत्यन्त घटनापूर्ण रहा। यदि वह अपनी आत्मकथा लिख जाते तो अच्छा होता। हमें उसे पढ़कर उनसे सम्बन्धित बहुत से तथ्यों को जानने का अवसर मिलता। यदि सम्भव हो तो उनके जीवन के सभी प्रसंगों का संग्रह कर उसका प्रकाशन किया जाना चाहिये जैसा कि पं. लेखराम रचित ऋषि के जीवन में किया गया है। आर्य समाज के पूजनीय विद्वान प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु उनके निकट रहे हैं। वह यदि डा. धर्मवीर जी विषयक अपने सभी संस्मरण लेखबद्ध कर दें तो यह उत्तम कार्य होगा।

डा. धर्मवीर जी ने परोपकारिणी सभा को एक नई पहचान दी। ऋषि उद्यान में नये भवन बने, विद्वानों का सत्कार होने लगा। गोशाला के संचालन के साथ सभा में आचार्य सत्यजित् आर्य जी का निवास व गुरुकुल का संचालन भी सभा की महनीय गतिविधियां रही हैं। परोपकारी मासिक पत्र का तो मासिक से पाक्षिक होना और कुछ सौ की प्रकाशन संख्या से सहस्रों की संख्या का स्तर प्राप्त करना आपके कुशल दिशा-निर्देशन का ही परिणाम कहा जा सकता है। ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य सहित विगत कुछ वर्षों में पं. विश्वनाथ वेदोपाध्याय कृत अथर्ववेदभाष्य एवं ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापनों का प्रकाशन भी परोकारिणी सभा के स्तुत्य कार्य हैं जिनका मुख्य श्रेय आपको ही है। परोपकारी पाक्षिक में आपका लगभग तीन पृष्ठों का सम्पादकीय प्रत्येक अंक में प्रकाशित होता था। विषय की जो स्पष्टता और अभिव्यक्ति आपके सम्पादकीय में होती थी वह हमें अन्य किसी पत्रिका के सम्पादकीय में पढ़ने को नहीं मिलती थी। कुछ वर्ष पूर्व पं. क्षितीज वेदालंकार के आर्यजगत में सम्पादकीय भी अति रुचिकर होते थे। इसका यह प्रभाव था कि जब भी परोपकारी पत्रिका आती थी तो हम उसमें सम्पादकीय और जिज्ञासु जी का '**कुछ तड़प-कुछ झड़प**' लेखों को प्रथम पढ़ते थे। अक्तूबर, २०१६ के द्वितीय अंक में भी '**यज्ञ की वेदी पर पाखण्ड के पॉव**' शीर्षक सम्पादकीय पढ़ने को मिला। अब आगे से यह श्रृंखला टूट गई है जिसका हमें दु:ख है। यदि परोपकारी में प्रकाशित आपके सभी लेखों का एक संग्रह प्रकाशित कर दिया जाये तो यह उत्तम कार्य होगा। एक ओर जहां इन सभी लेखों की रक्षा होगी वहीं हमारे शोध छात्रों को भी कुछ विशेष पढ़ने व सीखने को मिलेगा। हमारे पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक भी इससे शिक्षा लेकर अपने सम्पादकियों में सुधार कर सकते हैं। ४०-४५ वर्ष पूर्व आर्यसमाजी बनने के बाद से परोपकारी पत्रिका हमारी प्रिय पत्रिका रही है। हमने तभी से इसे व अन्य कुछ पत्रिकाओं को वर्ष भर के अंकों को बाइण्ड कराकर रखना आरम्भ कर दिया था। बीच में एक बार यह श्रृंखला टूट गई थी परन्तु इसके बाद हमने इसे पुन: आरम्भ कर दिया था। आज हमारे पास परोपकारी पत्रिका साहित्य भी एक बहुत बड़ी पूंजी के रूप में विद्यमान है जिसे कुछ समय बाद हमें भी किसी योग्य पुस्तकालय को सौंपना है जहां इसकी रक्षा होने के साथ अधिक से अधिक लोग इसका लाभ उठा सकें।

डा. धर्मवीर जी तीन पुत्रियों के पिता एवं विद्वान् गृहस्थी थे। हर गृहस्थी की इच्छा होती है कि उसका अपना घर हो परन्तु वह इस इच्छा में फंसे नहीं। उन्होंने अपना कोई घर नहीं बनाया। आप आर्यसमाजों के उत्सवों व आयोजनों में उपदेशों व प्रचार के लिए जाते थे परन्तु आपने कुछ अन्य प्रचारकों की तरह कभी अपनी दक्षिणा और यात्रा भत्ता न तय किये और न किसी प्रकार की कहीं किसी से मांग की। इस विषय में प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी कहते हैं कि '**धर्मवीर जी ने घर नहीं बनाया। अपने लिए कभी कुछ नहीं मांगा। न दक्षिणा मांगते हुए उन्हें देखा गया और न ही मार्ग व्यय की कहीं मांग की। घर घाट बनाने, धन कमाने की कतई चिन्ता नहीं की। जो कुछ कहीं से मिला, चुपचाप सभा को भेंट करते रहे।**' एक स्थान पर जिज्ञासु जी ने बताया है कि '**वह**

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

ईश्वर से कोई ऐसा वरदान लेकर आये थे कि वह निरन्तर नया-नया इतिहास रचते रहे। जहां भी हाथ लगाया, एक सृष्टि रच दी। धर्मवीर जी किसी व्यक्ति की चाकरी नहीं करना चाहते थे, वह ध्ययेनिष्ठ थे। इतिहास में ऐसे दृढ़ निश्चय वाले व्यक्ति ही स्थान पाते हैं।' ५ अक्तूबर को मृत्यु से पूर्व की रात्रि उनका स्वास्थ्य अत्यन्त चिन्ताजनक था। गुरुकुल का ब्रह्मचारी योगेन्द्र आर्य रात्रि को उनकी सेवा व देखभाल कर रहा था। देर रात्रि में उन्होंने उस ब्रह्मचारी को कहा, **'आप मेरी चिन्ता न करें। आप सो जायें। आप विश्राम करें।'** ऐसे संस्कार व ऐसा व्यवहार कुछ विरले महापुरुषों में ही देखने को मिलता है।

आचार्य धर्मवीर जी का स्वभाव निराला था। आपके प्रवचन सुनने वाले श्रोताओं की संख्या दो-तीन, सहस्र व सहस्राधिक हो, आपको इसकी कोई चिन्ता नहीं होती थी। आप प्रति वर्ष कुछ समय के लिए बिना कहीं से किसी के आमंत्रण मिले ही दूरस्थ प्रदेशों, ग्रामों व नगरों में जहां आर्यसमाजें या तो हैं नहीं और यदि हैं तो शिथिल हो चुकी अथवा मृत प्राय: हैं, जहां कोई विद्वान् प्रचारार्थ जाना नहीं चाहता, वहां पहुंच जाते थे। अपनी धर्मपत्नी जी को भी आप साथ ले जाते थे। ओम् मुनि जी और प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी भी इन यात्राओं में आपके साथी रहते थे। इस वर्ष के पूर्वार्ध में जब आप गये तो उसका समाचार परोपकारी पत्र में पाठकों को पढ़ने को मिला था जिसमें बहुत उपयोगी जानकारियां थी। २०१७ की प्रचार यात्रा के विषय में भी आपने राजेन्द्र जिज्ञासु जी से चलभाष पर अजमेर में बैठ कर योजना बनाने को कहा था। यात्रा में किस-किसको साथ ले जाना था, यह अभी तय होना था परन्तु इससे पूर्व ही आप अपनी अन्तिम यात्रा पर अकेले ही निकल गये।

डा. धर्मवीर जी २० सितम्बर, २०१६ को जबलपुर आर्यसमाज के ५ दिवसीय उत्सव के लिए अजमेर से निकले थे। आपकी धर्मपत्नी ज्योत्सना जी को भी साथ जाना था परन्तु किसी कारण वह न जा सकीं। जबलपुर में उन्होंने पांच दिन का उत्सव पूरा किया और **२५ सितम्बर को दिल्ली के निकट पिलखुआ आर्यसमाज के ७ दिवसीय उत्सव में पहुंच गये। यहां आपका स्वास्थ्य में बिगाड़ हुआ जिसकी गम्भीरता को न जानकर आप अस्वस्थ होते हुए तथा कष्ट झेलते हुये भी निरन्तर व्याख्यान देते रहे। उत्सव के अन्तिम दिन तो व्याख्यान भी न दे सके परन्तु अपनी सेवा के लिए किसी को कष्ट नहीं दिया। परिवार के सदस्यों ने रेल से अजमेर न जाकर गाड़ी भेजकर उसमें आने के लिए कहा परन्तु आप रेल से ही अजमेर के लिए चल दिये। अजमेर पहुंचने तक आपकी स्थिति अत्यन्त असहाय सी हो गई थी। आप रेल से बाहर भी न आ सके। ऐसी स्थिति में रेलवे स्टेशन से आचार्य सत्यजित् जी अपने कुछ ब्रह्मचारियों के साथ आपको ऋषि उद्यान ले गये और स्वास्थ्य की गम्भीरता को देखते हुए वहां से तुरन्त अस्पताल ले जाया गया।** वहां उपचार आरम्भ हुआ। आवश्यक दवायें दी गईं तथा जांच व परीक्षण आदि किये गये। सायं को ऋषि उद्यान आ गये। भोजन में उन्होंने कुछ दूध लिया और बोले **'वैसे तो मैं ठीक हूं परन्तु शरीर साथ नहीं दे रहा है।'** प्रात: स्वास्थ्य फिर बिगड़ने पर डाक्टर को फोन कर धर्मवीर जी को अस्पताल ले गये। आई.सी.यू. में रखकर डायलेसिस किया गया। कारण यह था कि किडनी में संक्रमण हो गया था। कुछ सुधार दिखाई दिया परन्तु ६ अक्तूबर को प्रात: पांच बजे स्थिति बिगड़ गई और कुछ देर बाद आप संसार को छोड़कर विदा हो गये। डाक्टर ने अपनी ओर से सभी प्रयत्न किये परन्तु वह सभी व्यर्थ रहे।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश ने अपने संस्मरणों में लिखा है कि डा. धर्मवीर जी विद्यार्थी जीवन में अपने गुरु स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी के प्रिय शिष्य रहे। वह बाहर भी जाते तो धर्मवीर जी का नाम उनके मुख से अनायास निकल जाता था। इसे स्मरण कर स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

ने लिखा है कि स्वामी ओमानन्द जी की डा. धर्मवीर जी के प्रति आत्मीयता का ही परिणाम था कि परोकारिणी सभा का प्रधान बनने के समय आपने योग्य शिष्य डा. धर्मवीर जी को परोपकारिणी सभा में सदस्य बनाकर उसका उत्तरदायित्व दिया और अजमेर में ही (दयानन्द कालेज, अजमेर में) नियुक्ति कराकर स्वयं निश्चिन्त हो गए। पूज्यपाद गुरु ओमानन्द जी अपनी सूझ बूझ वा दूरदर्शिता से अपनी दीर्घकालीन योजना को सफल कर गए। स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने भोजन विषयक एक अन्य संस्मरण में डा. धर्मवीर जी की बोलचाल में बेबाकी के गुण को भी प्रस्तुत किया है। स्वामी जी और डा. धर्मवीर जी एक बार बहराईच जिले के ममलार्जुनपुर आर्यसमाज के शताब्दी समारोह में मिले। भोजन के समय धर्मवीर जी को पूरी व आलू-बैंगन खाते देखकर धर्मेश्वरानन्द जी ने टोका। कहा कि आपको समाज के अधिकारियों को अनुकूल भोजन के लिए कहना उचित था। इस पर **धर्मवीर जी स्वामी जी को बोले! 'अरे हमें कोई यहां बसना है, जैसा मिल जाये सब चलता है।'** धर्मेश्वरानन्द जी ने चावल के साथ आलू-बैगन खाकर काम चलाया लेकिन वह कहते हैं कि आचार्य धर्मवीर जी के विषय में वह आज तक चिन्तित हैं कि अन्य स्थानों की समाजों में उन्होंने अपने लिए पृथक से स्वास्थ्यानुकूल भोजन की कभी व्यवस्था नहीं कराई। **शायद उसी का दुष्परिणाम सामने आया है।** धर्मवीर जी ने ऋषि उद्यान में वानप्रस्थ व सन्यास आश्रम, अतिथिशाला, गुरुकुल, गौशाला, भोजनालय, बड़ा हाल, सरस्वती भवन के नवीनीकरण आदि अनेक कार्य कराए, यज्ञशाला का पुनरुद्धार भी कराया, इन कार्यों पर करोड़ो रुपयों का व्यय हुआ। आपमें लोगों से सहायता रूप में दान लेने की प्रभु प्रदत्त प्रतिभा सहित वरदान प्राप्त था जिसे आप सहज भाव से कर लेते थे। आपने यह भी लिखा है कि आचार्य सत्यजित् आर्य जी, आचार्य सोमदेव जी, आचार्य विश्वड्. जी, आचार्य कर्मवीर जी आदि सर्वात्मा समर्पित होकर भावी पीढ़ी के निर्माण में आचार्य धर्मवीर जी के अनन्य सहयोगी बनकर कार्य करते रहे हैं और उनका यह कार्य आगे जारी रहेगा।

वैदिक गर्जना के सम्पादक श्री नयनकुमार आचार्य ने धर्मवीर जी को अपनी श्रद्धांजलि में कहा है कि ऋषि द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा का कायाकल्प करने में अहर्निश अपना जीवन लगाने वाले श्री धर्मवीर जी जैसे व्यक्ति आज कहां मिलेंगे? अपनी अपूर्व दूरदर्शिता, अनुपमेय संगठन कौशल्य, अप्रतिम अर्थशुचिता व अनोखी धैर्यशीलता का परिचय देते हुए ऋषि की धरोहर परोपकारिणी सभा को सर्वाधिक गतिमान बनाने में वे सर्वतोमना संलग्न रहे। जब से वे परोपकारिणी सभा से जुड़े कभी विश्राम नहीं पाया। उनका जीवन और यहां तक कि मरना भी, सब कुछ आर्यसमाज के लिए ही सिद्ध हो गया। परोपकारिणी सभा हो या इसकी परोपकारी पत्रिका, ये दोनों डा. धर्मवीर जी के पर्याय बन चुके थे। सभा को आर्थिक दृष्टि से बलवती बनाने व इसके कार्य विस्तार में वे हर क्षण ऐसे जुटे रहे, मानों श्वेतवस्त्रों में घूमते-फिरते सन्यासी ही हों। वह आगे लिखते हैं **'प्रो. डॉ. धर्मवीर जी का जन्म स्वतन्त्रता से एक वर्ष पूर्व २० अगस्त १९४६ को सन्त-सुधारकों की भूमि महाराष्ट्र के लातूर जिलांतर्गत उद्गीर के समीपस्थ नांगलगांव में क्रान्तिकारी आर्य परिवार में हुआ। माता श्रीदेवीजी एवं पिता भीमसेन जी कट्टर वैदिकधर्मी थे। क्रांतिकारी नेता भाई बन्सीलाल जी आपके नाना जी थे। आरंभिक शिक्षा के बाद धर्मवीर जी को अगली पढ़ाई हेतु गुरुकुल झज्जर भेजा गया। यहां पर ही आपने लेखन के संस्कार हस्तगत किए।'**

डा. धर्मवीर जी के ६ अक्टूबर, २०१६ को दिवंगत होने पर आचार्य देवव्रत (राज्यपाल, हि.प्र.) ने कहा कि यदि हजार व्यक्ति एक तरफ हों तो भी दूसरी तरफ धर्मवीर नामी अकेला शेर काफी था। वह जो लिखते थे उनका कोई जबाब नहीं था। मन्त्रों पर बोलने वाला उन जैसा कोई वक्ता नहीं था। व्यंग करने लगें तो लोटपोट कर दें। आर्यसमाज में लम्बे अन्तराल के बाद ऐसा व्यक्ति पैदा

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

हुआ, जिसमें पं. लेखराम व गुरुदत्त के दर्शन होते थे। वो जिस सोच को जनमानस तक पहुंचाना चाहते थे, उसे पूरा करने का हमें संकल्प लेना चाहिये। प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी कहते हैं कि डा. धर्मवीर जी परोपकारिणी सभा को जिस ऊंचाई पर ले आये हैं, ये अपने आप में एक असाधारण बात है। आज आर्यसमाज ने एक हीरा खो दिया। श्री गोपाल बाहेती के अनुसार धर्मवीर जी प्रत्येक राष्ट्रीय समस्या पर बड़े बेबाक सम्पादकीय लिखते थे। यह क्षति अपूरणीय है। आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक के अनुसार डा. धर्मवीर जी मान-अपमान में सदैव सहज रहे। डा. जगदेव विद्यालंकार जी के अनुसार डा. धर्मवीर जी के जीवन में विलक्षणता थी, आनन्द था। महर्षि दयानन्द ने जिस सत्य के लिए अपना जीवन दिया, डा. धर्मवीर जी उस सत्य के लिये जीवन भर लगे रहे। गृहस्थ होते हुये भी उनका जीवन विरक्त था। उनके जीवन में उनकी धर्मपत्नी का विशेष योगदान रहा। परिवार की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेकर धर्मवीर जी को समाज-सेवा के लिये मुक्त रखा। स्वामी धर्मानन्द जी का कहना है कि धर्मवीर जी के दृढ़ निश्चय का ही परिणाम है कि ऋषि उद्यान अपने इस वर्तमान स्वरूप में है। आर्य विद्वान डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री बताते हैं कि जनज्ञान पत्रिका के संस्थापक पं. भारतेन्द्र नाथ जी ने अपनी पत्रिका 'जनज्ञान' में डा. धर्मवीर का एक फोटो छापा था, जिस पर लिखा था **''आशा की नई किरण''।** ये वाक्य शत-प्रतिशत सही सिद्ध हुआ। हमने पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, पं. लेखराम जी को नहीं देखा है, पर धर्मवीर जी में हम उनके दर्शन कर सकते हैं। श्री रामनारायण शास्त्री जी ने लिखा है कि जो निर्भीकता एक ब्राह्मण में होनी चाहिये, जैसा ब्राह्मण को लिखना चाहिये, बोलना चाहिये, करना चाहिये, इन सब गुणों का उदाहरण थे डा. धर्मवीर जी। हम उनके कार्यों को आगे बढ़ाये तो हम सच्ची श्रद्धांजलि दे पायेंगे। स्वामी विदेहयोगी के अनुसार डा. धर्मवीर जी आर्यसमाज की वाटिका के एक माली थे, इस वाटिका को उन्होने अपना जीवन देकर सींचा है। श्री रासासिंह रावत ने धर्मवीर जी के विषय में कहा कि उन्होंने जिस कार्य को आरम्भ किया, उसे पूरी ऊंचाई पर ले जाकर सम्पन्न किया। दर्शन योग महाविद्यालय के स्वामी ध्रुवदेव जी के अनुसार डा. धर्मवीर जी की वेद और वैदिक सिद्धान्तों में गहरी निष्ठा थी। अपने तप, त्याग, अर्थ-शुचिता आदि गुणों के कारण ही वे पूज्य थे। ऋषि उद्यान के ब्रह्मचारी रविशंकर के अनुसार सभी के अन्दर ये विचार उठ रहे हैं कि डा. धर्मवीर जी की भरपाई कैसे होगी, पर ये कहना उनकी प्रशंसा नहीं, अपमान होगा, क्योंकि इससे हम उनके कार्यों को आगे बढ़ाने में असमर्थता जता रहे हैं। हम उनके कार्यों को और गति प्रदान करें, यही उनके लिये सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

हमने इस लेख में अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित आर्य विद्वानों के लेखों व इतर सामग्री का प्रयोग किया है। हम सभी लेखकों व पत्र-पत्रिकाओं के आभारी हैं। हमने भी अनेक अवसरों पर डा. धर्मवीर जी के दर्शन किए, उनके अनेक प्रवचनों को सुना, उनके द्वारा कराये गये वेद पारायण यज्ञों में सम्मिलित हुए तथा उनके लेखों व विचारों को भी कुछ कुछ जाना है। नवम्बर, २०१३ में वह देहरादून आर्यसमाज में उपदेश हेतु पधारे थे। एक दिन हम उन्हें दर्शनों के भाष्यकार आचार्य उदयवीर शास्त्री जी की सुपुत्री श्रीमती आभा सिंह जी के निवास पर ले गये थे, वहां उनके वार्तालाप को सुना था। इसी दिन वह कुछ समय के लिए हमारे निवास पर भी आये और हमारे परिवार को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। उनकी याद आती रहती है और हर बार मन में पीड़ा होती है जिसका कारण उनका महान् व्यक्तित्व, उत्तम व श्रेष्ठ कार्यों सहित भविष्य में आर्यसमाज का उनके मार्गदर्शन व कार्यों से वंचित होना है। आगामी ४ से ६ नमम्बर, २०१६ को अजमेरे में ऋषि उद्यान में आयोजित ऋषि मेले में भी अपनी श्रद्धांजलि देने हेतु सम्मलित हो रहे हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह श्रद्धेय धर्मवीर जी की आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान करें। इति शम्।

-१९६ चुक्खूवाला-२
देहरादून-२४८००१

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

प्रो. धर्मवीर जी एक संस्मरण

❑ आचार्य रामचन्द्र...✍

उन दिनों धर्मवीर जी परोपकारिणी सभा के मन्त्री थे। प्रातः अपने केसरगंज स्थित आवास से निकलकर भ्रमण करते हुए हाथ में स्वामी ब्रह्ममुनि जी कृत वेदान्त दर्शन का भाष्य पुस्तक हाथ में लिए हुए मुँह अंधेरे ऋषि उद्यान में पहुँच जाते हैं। उद्यान में सरस्वती भवन और यज्ञशाला के अतिरिक्त अनासागर के तट पर कुछ पुराने भवन भी बने हुए थे। शेष सब खुला मैदान था। इस मैदान में काँटेदार झाड़ियों का जंगल सा बसा हुआ था। आते ही खुर्पी हाथ में लेकर जड़ मूल से उन झाड़ियों को उखाड़ना शुरू कर देते थे। पूछने पर बोले इन पर बीज आने से पहले इन सब झाड़ियों को यहाँ से हटा देना है जिससे अगले साल एक भी कांटेदार झाड़ी यहाँ नहीं उगेगी। तब पहली बार धर्मवीर जी में एक सच्चे कर्मयोगी के दर्शन हमें हुए।

ऋषि उद्यान में उस समय केवल एक सेवक सपत्नीक रहता था। आर्यवीर दल के संचालक श्री योगेन्द्र जी भी सपरिवार यहाँ रहते थे। लेखराम अतिथिशाला का निर्माण कार्य प्रगति पर था। सभा के अधिकारी एवं अन्य लोग भी पूछते थे-यहाँ कोई रहता नहीं; इस सुनसान में कोई रहेगा? इसकी संभावना भी नहीं है। आप एक दो नहीं अपितु सोलह आवासों को शौचालय, स्नानागार, रसोई तथा बरामदों सहित बना रहे हैं, इनमें कौन रहेगा कहते ईश्वर ने सृष्टि रचना पहले कर दी थी, रहने वाले तो बाद में आए थे। भवन बन जाने दो रहने वाले भी आ जाएँगे। धर्मवीर जी स्वप्न द्रष्टा थे। स्वप्न देखते भी थे और उन्हें साकार भी करते थे। आज के ऋषि उद्यान में भव्य प्रवेश द्वार के अन्दर व्यक्तित्व पार्क, अतिथिशाला, अनुसन्धान भवन, विशाल पाकशाला, भोजनशाला उसके ऊपरी भाग में विशाल कक्ष तथा वानप्रस्थाश्रम सभा का भव्य कार्यालय आधुनिक सुविधाओं से युक्त विशाल गोशाला आदि अनेक भवनों का निर्माण हो चुका है। उद्यान में हर समय ७०-८० लोग रहते हैं। औषधालय और चिकित्सक भी हैं जिससे आश्रम तथा अन्य भी स्थानीय लोग भी लाभ उठाते हैं।

जहाँ भी कोई विद्वान अथवा अच्छा कार्यकर्ता दिखाई पड़ा तत्काल उसे ऋषि उद्यान में आकर रहने के लिए प्रेरित करते और उनको बार-बार प्रेरित करते ही रहते थे। इससे योग्य व्यक्तियों का एक केन्द्र बन गया है ऋषि उद्यान।

जब धर्मवीर जी ने परोपकारी पत्रिका का सम्पादन कार्य संभाला तब परोपकारी के लगभग हजार-बारह सौ ही ग्राहक होते थे, आपके ही पुरुषार्थ से आज यह संख्या बाईस सहस्र तक पहुँच चुकी है और वह भी मासिक के स्थान पर पाक्षिक के रूप में छप रही है। बहुधा कहा करते थे-मैं चाहता हूँ कि कोई महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, प्रतिष्ठित पुस्तकालय ऐसा नहीं होना चाहिए जहाँ परोपकारी पत्रिका नियमित रूप से न जाती हो। इस प्रसंग में पं. लेखराम के जीवन की एक घटना याद हो आती है जब उन्हें कारबंकल फोड़ा निकल आया। प्रचार कार्य की अधिकता से कहीं ठहरते न थे। जब करनाल में लाला मुन्शीराम जी के साथ इकट्ठे प्रचार के लिए आए तो लाला जी तथा स्थानीय आर्यों के दबाव देने पर इलाज के लिए तैयार हो गए और बोले-ठीक है किसी आर्य डाक्टर के यहाँ ले चलो। लोगों ने कहा डाक्टर के आर्य अथवा अनार्य होने से क्या अन्तर पड़ता है, तब इस प्रश्न का जो उत्तर आर्य मुसाफिर ने दिया, स्वामी श्रद्धानन्द जी लिखते हैं उसने मेरा सर उनके चरणों में

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

सदा के लिए झुका दिया। उत्तर था जहाँ डाक्टर, अध्यापक और अन्य बुद्धिजीवी आर्य नहीं बने वहाँ आर्यसमाज के होने का लाभ ही क्या है? यही सोच डॉ0 धर्मवीर की भी थी।

अधिकारियों ने व्यक्तिगत खुन्नस के कारण दयानन्द कॉलेज अजमेर से आपकी सेवाओं को निलम्बित कर दिया। आप कहाँ करते थे यह तो अच्छा हो गया नहीं तो मैं आर्यसमाज के कार्यों में इतना समय कहाँ दे पाता। अब घर भी ठीक चल रहा है और समाज के कार्यों का भी अच्छा निर्वहन कर रहा हूँ। आपके विरुद्ध जो आरोप पत्र जारी किया गया था, वह भी वास्तव में आपके कार्यों के महत्व का, आपके दृढ़ चरित्र का एक प्रमाण है। उसमें आरोप लगाया गया था-

१. आप परोपकारिणी सभा का कार्य करते हैं।

२. आप परोपकारी पत्रिका का सम्पादन करते हैं, आप आर्यसमाज का प्रचार करते हैं। आरोप पत्र पढ़कर सहसा मेरे मुख से निकला-डॉ. साहब यह आरोप पत्र है या अभिनन्दन पत्र।

आपके ही सत्प्रयास से ऋषि उद्यान में पिछले **२२-२३** वर्षों से एक आदर्श गुरुकुल चल रहा है। वर्ष में अनेक योग शिविर, दर्शनाध्ययन शिविर आदि चल रहे हैं। धर्म विरोधियों, सैद्धान्तिक विरोध से आप सतत् लोहा लेते रहे। आज तो आप आर्य समाज की एक धुरी बन चुके थे। परोपकारिणी सभा आपके तेजस्वी नेतृत्व से अचानक वंचित हो गई। कोई भी क्षति अपूरणीय तो नहीं होती यदि ईमानदार प्रयास किया जाए। पर इतने बड़े स्तम्भ के अकस्मात गिर जाने से एक बड़ा झटका तो लगता ही है। -**सोनीपत (हरयाणा)**

निमन्त्रण-पत्र

आप सभी को यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास ११९ गुरुकुल गौतमनगर नई दिल्ली-४९ का **८३ वॉ वार्षिकोत्सव व स्थापना दिवस एवं ३७ वॉ चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ २७ नवम्बर २०१६ रविवार से १८ दिसम्बर रविवार २०१६** तक पूर्व वर्षों की भॉति इस वर्ष भी विभिन्न भव्य सम्मेलनों के साथ हर्षोल्लास से सम्पन्न हो रहा है । चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ के ब्रह्मा वेदों के प्रकाण्ड पण्डित **डॉ. महावीर** (पूर्व कुलपति, उ.सं.वि.वि. हरिद्वार) होंगे । महायज्ञ में आर्यजगत् के उच्चकोटि के साधु-सन्यासी, विद्वान्-मनीषि तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

इस अवसर पर आप स्वयं यजमान बनकर दूसरों को प्रेरित कर पुण्य के भागी बनें तथा यज्ञ में दान देकर गुरुकुल की सहायता कर कृतार्थ करें। आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है।

आप सभी अपने इष्ट मित्रों एवं पारिवारिकजनों व्यक्तियों के साथ पधार कर धर्म लाभ प्राप्त करें।

निवेदक:-

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

एवं समस्त अधिकारी व सदस्य, वेदार्ष-न्यास

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

धर्मवीर जी यूँ जाना...

❑ राम निवास गुणग्राहक...✍

हाय! देव के दुर्विपाक से, ये क्या अपने साथ हो गया।
धर्मवीर जी का यूँ जाना, बहुत बड़ा आघात हो गया॥
जिनको पाकर परोपकारिणी प्रगति पथ पर चल निकली थी।
परोपकारी पत्र लोकप्रिय, ऋषि उद्यान सनाथ हो गया॥
उनके जितने सद्गुण वाला व्यक्ति मिलना महा कठिन है।
इसीलिये आने वाला दिन, दिन न रहा, अब रात हो गया॥
उनके अपने पन की परिधि, इतनी विस्तृत और विशाल थी।
सत्यनिष्ठ, सिद्धान्तनिष्ठ, हर व्यक्ति उनके साथ हो गया।
लेकिन कपट कुटिलता रखकर सज्जनता का पहन मुखौंटा,
जो छलने टकराने आया, तर्क बुद्धि से मात हो गया॥
स्वाध्याय उनका सजीव था, वेद शास्त्र भाषा पण्डित थे।
आयुर्वेद व्याकरण उनको तत्त्वरूप से ज्ञात हो गया॥
उनके प्रवचन लेखन दोनों वर्तमान में अद्वितीय थे।
सम्पादकीय पढ़ा जिसने भी, सबको आत्मसात हो गया।
पता नहीं वो क्या नाता था, उनका कितनों से ऐसा था?
बढ़े बड़ों को धीरज टूटा, खुलकर अश्रुपात हो गया॥
यह सब कुछ लिखते लिखते 'गुणग्राहक' तू भी रोया था।
महीनों तक यूँ रोयेगा ऐसा विकट विषाद हो गया॥
भावी कल को आज समान देखने की अन्तर्दृष्टि थी,
जिसके बल उनका हर निर्णय, आज सुखद संवाद हो गया।
रवि सम ज्ञान प्रकाश हमें, मिलता संग शीतल-सी ज्योत्सना के,
सुखद सुहाना समय हाय क्यों, सहसा उल्कापात हो गया।
अधिक क्या कहूँ सद्गुण प्रेरक, सज्जनता का पोषक जीवन
कल जो हम सबका हिस्सा था, आज पुरानी बात हो गया॥

घर बैठे पढ़ने के लिए क्लिक करें - www.pranwanand.org

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

आर्य समाज के नियमों की व्याख्या

(स्वामी देवव्रत सरस्वती के कतिपय प्रवचनों का संग्रह)

❑ संकलनकर्ता-आचार्य डॉ. धनञ्जय.....✍

क्रमशः.... आर्यसमाज के नियमों की व्याख्या

किसी भी संस्था को चलाने के लिये विधि-विधान, नियम-उपनियम, आचारसंहिता एवं दण्ड विधान का होना बहुत आवश्यक है। आर्यसमाज की स्थापना सन् १८७५ ई0 में मुम्बई में हुई और उस समय २८ नियमोपनियम बनाये गये। आगे लाहौर में आर्यसमाज की स्थापना होने पर महर्षि दयानन्द जी ने इनमें संशोधन कर दस नियम बनाये और अवशिष्टों को उपनियमों में रख दिया।

इनमें प्रथम तीन को छोड़ शेष सभी नियम सार्वभौम कहे जा सकते हैं जिनके पालन या स्वीकार करने में किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती। प्रथम दो नियम ईश्वर से सम्बन्धित हैं जिनमें वेदोक्त ईश्वर के स्वरूप का वर्णन किया है। तीसरा नियम ईश्वर की वाणी वेद को सब सत्य विद्याओं का मूल बतलाता है। चतुर्थ, पञ्चम में व्यक्तिगत जीवन कैसे व्यतीत करें यह बतलाया है। छठे नियम में आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य अर्थात् शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक उन्नति करना माना है। शेष नियम सामाजिक व्यवहार में कर्तव्यों का विधान करते हैं। व्यक्ति का ईश्वर के प्रति क्या कर्तव्य है? अपने और समाज के लिये क्या करना चाहिये, इनका विधान किया है।

दर्शन शास्त्र में तत्वज्ञान और नीति या आचार शास्त्र का समावेश होता है। तत्वज्ञान के अन्तर्गत किसी पदार्थ के स्वरूप का वर्णन किया जाता है। आर्य समाज के प्रथम तीन नियम तत्वज्ञान से सम्बन्धित हैं जिनमें ईश्वर की सत्ता उसका स्वरूप, जीवात्मा तथा जगत् की सत्यता और ईश्वरीय ज्ञान वेद का वर्णन किया गया है। शेष नियम विधेयात्मक हैं जिनके अन्त में चाहिये क्रिया का प्रयोग हुआ है।

प्रथम नियम -

सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।

इस नियम को समझने के लिये इसको तीन भागों में विभक्त करना होगा-

१. सब सत्यविद्या।

२. विद्या से जो पदार्थ जाने जाते हैं।

३. परमेश्वर उन सबका आदिमूल है।

विद्या का लक्षण आर्योद्देश्य रत्नमाला में इस प्रकार किया है- **'जिससे ईश्वर से लेकर पृथिवीपर्यन्त पदार्थों का सत्यज्ञान होकर, उनसे यथायोग्य उपकार लेना होता है, इसका नाम विद्या है।'**

शुक्रनीति में १४ विद्या और ६४ कलाओं का वर्णन किया है। सत्यविद्या से अभिप्राय यह है कि जो तीन काल में एक रस रहती है, अपरिवर्तनशील है, जिसका विकास या ह्रास नहीं होता हो। ईश्वर, जीव, प्रकृति का ज्ञान ही इस कोटि में आता है। यह ज्ञान वेद में है और ईश्वर ही इस का आदि कारण है। सृष्टि के प्रलय होने पर भी ईश्वर में यह ज्ञान स्थित रहता है और सृष्टि की उत्पत्ति हो जाने पर ऋषियों के हृदय में ईश्वर की प्रेरणा से यह प्राण प्रकट होता है।

स एषः पूर्वेषामपि गुरूः कालेनानवच्छेदात् (योग)

प्राचीन अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा और ब्रह्मादि ऋषि सृष्टि के आदि में उत्पन्न हुए थे, उनसे हम और जो आगे होने वाले हैं इन सबका गुरु परमेश्वर ही है। क्योंकि जैसे जीव सुषुप्ति एवं प्रलय की अवस्था में ज्ञान रहित हो जाते हैं, वैसा परमेश्वर नहीं होता। उसका ज्ञान नित्य है क्योंकि ईश्वर में क्षण आदि काल की गति का प्रचार नहीं

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

है। सत्यविद्या से यहाँ वेद का ग्रहण जानना चाहिये और इस ज्ञान का आदि कारण परमेश्वर है।

२. जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं इसका अर्थ हुआ कि वेद से जिन-जिन पदार्थों का ज्ञान होता है। शब्द द्वारा व्यक्त किसी भी वस्तु को पदार्थ कहते हैं। यहां पदार्थ से अभिप्राय कार्य जगत् से है। ईश्वर ने यह ज्ञान वेद द्वारा चार ऋषियों को दिया।

उपादान कारण, निमित्त कारण और साधारण कारण, इन तीनों में प्रकृति जगत् का उपादान कारण तथा परमेश्वर निमित्त कारण है। निमित्त कारण उसको कहते हैं कि जिसके बनाने से कुछ बने, न बनाने से न बने। आप स्वयं बने नहीं, दूसरे को प्रकारान्तर बना देवे। निमित्त कारण दो प्रकार के हैं- एक सब सृष्टि को कारण से बनाने, धारण ओर प्रलय करने तथा सबकी व्यवस्था रखने वाला मुख्य निमित्त कारण परमात्मा। दूसरा परमेश्वर की सृष्टि में से पदार्थो को लेकर अनेक विध कार्यान्तर बनाने वाला साधारण जीव। संक्षेप में प्रथम नियम को ऐसे भी कह सकते हैं-परमेश्वर वेद और जगत् का निमित्त (आदि) कारण है।

अब प्रश्न उपस्थित होता है कि सभी मतावलम्बी अपने-अपने धर्मग्रन्थों को ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं। कौन सा ईश्वरी ज्ञाान है इसके लिये निम्न कसौटियां दी जाती है-

१. ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि के आदि में मिलना चाहिये।

२. ईश्वरीय ज्ञान किसी देश विशेष की भाषा न हो।

३. ईश्वरीय ज्ञान में किसी देश का भूगोल एवं इतिहास नहीं होन चाहिये।

४. इस ज्ञान में कोई बात सृष्टि क्रम के विपरीत नहीं होनी चाहिये।

५. वह ज्ञान ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल होना चाहिये।

इन कसौटियों पर केवल वेद ही खरा उतरता है। अधिक ज्ञानार्थ वेद को देखिये।

आर्य समाज के दश नियम वेद पर आधारित है-

१. वेद ईश्वरीय ज्ञान

तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत।।

(यजु. ३१/७)

२. कार्यजगत् का निमित्त कारण

ऋतं च सत्यञ्चाभीद्धातपसोऽध्यजायत

सत्य=कार्य रूप जगत् को ईश्वर ने प्रकृति से उत्पन्न किया।

स दाधार पृथिवीं द्यातुमेमाम् (यजु. १३/४)

वह ईश्वर भूमि और द्युलोक को धारण कर रहा है।

द्वितीय निमय -

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता हैं उसी की उपासना करनी योग्य है।

वैदिक धर्म के अतिरिक्त अन्य आस्तिक मत वालों ने ईश्वर के स्वरूप का वर्णन किया है परन्तु उनमें एकरूपता का अभाव है। किसी ने उसे एक माना है और कुछ अन्य देवी-देवताओं को भी उसके सहयोगी मानते हैं। कोई कहता है ईश्वर चतुर्थ आसमान पर है। कोई उसे सातवें आसमान पर बतलाता है। कोई उसे निराकार तो कोई साकार भी मानता है।

महर्षि दयानन्द जी ने वेद के आधार पर दूसरे नियम में ईश्वर के वास्तविक स्वरूप का वर्णन किया है जिसमें ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव का विशद वर्णन है। ईश्वर का स्वरूप - ईश्वर सत्+चित्त+आनन्द स्वरूप है। प्रकृति सत्, जीव सत्, चित्त और ईश्वर सच्चिदानन्द स्वभाव वाला है।

ईश्वर के गुण - ईश्वर सगुण ओर निर्गण दोनों है। प्रत्येक पदार्थ सगुण और निर्गुण से युक्त होता है। जो गुणों से सहित वह सगुण और जो गुणों से रहित वह निर्गुण

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

कहलाता है। अपने अपने स्वाभाविक गुणों से सहित और दूसरे विरोधी के गुणों से रहित होने से सब पदार्थ सगुण और निर्गुण है। कोई भी ऐसा पदार्थ नहीं है कि जिसमें केवल निर्गुणता वा केवल सगुणता हो, किन्तु किन्ही में सगुणता और निर्गुणता सदा रहती है। वैसे ही परमेश्वर अपने अनन्त ज्ञान-बलादि गुणों से सहित होने से सगुण और रूपादि जड़ के तथा द्वेषादि जीव के गुणों से पृथक् होने से निर्गुण कहाता है।

इन गुणों में निराकार और सर्वशक्तिमान् महत्वपूर्ण है। निराकार वस्तु ही सर्वव्यापक हो सकती है। सर्वव्यापक का ही सर्वज्ञ होना सम्भव है। सर्वज्ञता के बिना प्रकृति के परमाणुओं को विशेष अनुपात में संयुक्त कर उनसे सृष्टि की रचना सम्भव नहीं है तथा न्याय अर्थात् पाप-पुण्य का यथायोग्य निर्णय नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार सर्वशक्तिमान् ईश्वर ही सृष्टि की रचना, धारण और प्रलय करने में समर्थ है तथा कर्मानुसार जीवों को फल दे सकता है।

सर्वशक्तिमान् का अभिप्राय यह भी है कि ईश्वर को अपने कार्य-सृष्टि की उत्पत्ति और कर्मफल देने के लिये किसी दूसरे सहायक की आवश्यकता नहीं है।

ईश्वर के कर्म - सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय करना और जीवों को कर्मानुसार यथायोग्य फल देना ये ईश्वर के दो कर्म है।

स्वभाव - ईश्वर नित्य, पवित्र और आनन्द स्वरूप है, उसी की उपासना करने योग्य है-

ईश्वर के गुणकर्म-

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्।

कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदथाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।। यजु. ४०/८

उसी की उपासना - तमेव विदित्वाति मृत्युमेति (यजु. ३१/१८)

- आचार्य, गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

प्रश्न-ईश्वर साकार है, वा निराकार?

उत्तर-निराकार। क्योंकि जो साकार होता तो व्यापक न हो सकता। जब व्यापक न होता, तो सर्वज्ञादि गुण भी न हो सकते। क्योंकि परिमित वस्तु में गुण-कर्म्म-स्वभाव भी परिमित रहते हैं तथा शीतोष्ण, क्षुधा, तृषा और रोग, दोष, छेदन-भेदन आदि से रहित नहीं हो सकता। इससे यह निश्चित है कि ईश्वर निराकार है। और जो साकार होता, तो उसके आकार बनाने वाला दूसरा होना चाहिये। क्योंकि जो संयोग से उत्पन्न होता है, उसको संयुक्त करने वाला निराकार चेतन अवश्य चाहिये। जो कोई कहै कि ईश्वर ने अपना शरीर बना लिया, तो वही सिद्ध हुआ कि शरीर के बनने के पूर्व निराकार था। इसलिये वह परमात्मा न शरीर धारण करता, निराकार होकर सब जगत् को सूक्ष्म आकार से स्थूलाकार बनाता है।

- स्वामी दयानन्द सरस्वती

आप हमें अपनी प्रतिक्रिया व सुझाव भेज सकते हैं - arsh.jyoti@yahoo.in

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

राष्ट्र को समर्पित महान् वेदभक्त डॉ. धर्मवीर

❑ डॉ. मोक्षराज आर्य...✍

स्वामी स्वतंत्रतानंद जी और नारायण स्वामी जी के नेतृत्व में हैदराबाद निजाम के विरुद्ध संघर्ष जारी था। जिसमें हजारों आर्यसमाजियों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया, इस लडाई में हिन्दू महासभा के नायकों ने भी कंधे-से-कंधा मिलाकर सहायता की। हैदराबाद निजाम के अत्याचारों को सहने वाली वहाँ की प्रजा यह कल्पना भी नहीं करती थी कि हम समस्त रियासतों के विलय की शृंखला में भारत के अभिन्न अंग बन सकेंगे। इस सत्याग्रह में महाराष्ट्र के लातूर जिले में स्थित चाकूर गांव के जुझारू क्रान्तिकारी भीमसेन जी ने योजनाबद्ध ढंग से अपनी भूमिका निभाई, उन्होंने हैदराबाद निजाम के सैनिकों की पोषाक पहनकर तथा उनकी भाषा में विचार संप्रेषण करते हुए अत्यन्त भयावह तथा संवेदनशील क्षेत्रों में जिस राष्ट्र भक्ति का परिचय दिया, वह दाँतों तले अंगुली दबाने को विवश करता था। डॉ. धर्मवीर जी उन्ही क्रान्तिकारी पिता के ज्येष्ठ पुत्र थे।

ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित आर्ष विद्या की परम्परा को पोषित करने वाले गुरुकुल में पढ़कर देशभक्ति व वेदभक्ति से परिपूर्ण हुए, उज्ज्वल चरित्र के धनी, प्रखर विद्वान्, उच्च कोटि के लेखक स्मृति शेष डॉ. साहब में देशभक्ति कूट-कूट कर भरी थी। उन्होंने किसी भी स्तर पर देश के रीति-रिवाज, संस्कृति सभ्यता व पूर्वजों की उज्ज्वल परम्पराओं के साथ समझौता नहीं किया।

आरम्भ से उत्तरीय एवं कटि वस्त्र पहनने वाले डॉक्टर साहब ने मृत्यु पर्यन्त खादी के कुर्ते-धोती पहनते हुए सादगी का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया। आप तप और वैराग्य की साक्षात् प्रतिमा थे। जीवन में प्रतिकूलताओं व विरोधियों का अम्बार होने पर भी आप सदैव हंसते-मुस्कुराते उपाय ढूंढ़ लेते थे। टुकड़ों में जीने की उनकी आदत नहीं थी अर्थात् किसी भी प्रकार के जाति-बिरादरी के संगठनों, महासभाओं के वे कट्टर विरोधी थे। एक मित्र एक जाति विशेष की पत्रिका का सम्पादन किया करते थे, जिन्हें पूज्य गुरुजी ने कहा ''प्रदीप टुकड़ों में जीना बन्द करो। सारे देश के लिये लिखो, सम्पूर्ण भारत को एकजूट करने के सिद्धान्तों पर मन्थन करो।'' प्रदीप जी उनका बहुत सम्मान करते थे , उन्होंने अपनी कलम को पुनः उस दिशा में जाने नहीं दिया। कुछ लोग जब उनकी जाति पूछते थे तो वे कहते थे कि आप को जो मानना है (चमार, भंगी ब्राह्मण क्षत्रिय आदि), वो मान सकते हैं। मैं केवल एक ही जाति मानता हूँ और वह है मनुष्य जाति।

अनेक बार उन्हें अन्य मत सम्प्रदाय के लोगों के साथ चर्चा का अवसर मिलता था, जहाँ वे निर्भीकतापूर्वक राष्ट्र हितकारी सिद्धान्तों को मजबूती के साथ प्रस्तुत करते थे। एक बार सर्वधर्म मैत्री संघ अजमेर के द्वारा बुलाई बैठक के उपरान्त अल्पाहार के दौरान एक पादरी महाशय ने उनसे विनम्रतापूर्वक पूछा कि डॉक्टर साहब हम ईसाई लोगों को इस देश में सेवा करते हुए २०० वर्ष से अधिक समय हो गया, लेकिन आज तक भारत के लोगों में हमारे प्रति भरोसा क्यों नहीं है? डॉक्टर साहब ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया- पादरी साहब! यदि आप सेवा करते तो आप पर सब भरोसा कर सकते थे, लेकिन आपने २०० वर्षों में सेवा नहीं, सौदा किया है। आप कुछ देकर, बहुत कुछ ले लेते हो। पादरी महोदय ने उन्हें कहा कि डॉक्टर साहब आप बहुत स्पष्ट बोलते हो।इसी प्रकार जब देशभर में स्वामी विवेकानन्द की सार्द्ध शती मनाई जा रही थी, उन दिनों उन्होंने एक संन्यासी का व्यक्तित्व वैदिक ग्रन्थों के आधार पर क्या होना चाहिए तथा उसकी तुलना में स्वामी विवेकानन्द किस प्रकार से उपयुक्त आचार-विचार नहीं रखते थे। इस पर सप्रमाण सम्पादकीय, आलेख लिखा,

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

जिसके कारण उनसे कुछ संगठनों के लोग बहुत नाराज हुए। किन्तु परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित इस लेख का खण्डन करने का साहस आजतक किसी में नहीं हुआ।

डॉ. धर्मवीर जी की लेखनी, उनकी वाणी, उनकी अभिव्यक्ति राष्ट्रभक्ति व वेदभक्ति के लिये किसी के प्रमाण-पत्र की आवश्यकता नहीं थी। वे मँजे हुए लेखक, सम्पादक, प्रगल्भ वक्ता निर्भीक व ओजस्वी वार्ताकार तथा अद्वितीय देशभक्त थे।

उनके जीवन में अत्यन्त सरलता विद्यमान थी। एक बार ट्रेन में यात्रा के लिए जब उनका रिजर्वेशन कन्फर्म नहीं हुआ तब वे स्लीपर कोच में (टिकिट होते हुए) दोनों सीटों के मध्य फर्श पर ही सो गये। जब उनके सह यात्री परिचित हुए तब उन्हें बड़ी आत्मग्लानी हुई, इतने उच्चकोटि के विद्वान् ने नीचे लेटकर यात्रा की है। उनके साथ के उपदेशक, विद्वान् जब किसी कार्यक्रम में थककर सोए हुए होते थे तब वे अपने जूते, चप्पलों के साथ, उनके जूते, चप्पलों को भी साफ कर दिया करते थे। उनकी इस समदर्शी दृष्टि से बहुत कम लोग परिचित हैं। लगभग २० वर्षों तक पूरा वेतन नहीं मिलने के उपरान्त भी, उन्होंने कभी किसी के सामने हाथ नहीं फैलाये। केसरगंज से डी.ए.वी. कॉलेज तक व केसरगंज से ऋषि उद्यान तक पैदल आना-जाना तथा ऋषि मेले के अवसर पर किसी छोटे ऑटो को पकड़, संस्था के लिये घर-घर जाकर निष्काम भाव से चन्दा मांगना और सम्पूर्ण चंदे का शुचितापूर्वक उपयोग करते हुए संस्था की उन्नति में लगाना। आजीवन अवैतनिक सम्पादक के रूप में कार्य किया। जीवन में कभी किसी से दक्षिणा तय नहीं की। जो कुछ मिलता था अथवा कभी नहीं भी मिलता था, उसका किसी से जिक्र तक नहीं किया।

एक दिन मैं अचानक गुरुजी से मिलने घर चला गया, उस दिन माताजी दिल्ली गई हुई थीं, गुरुजी आटा लगा रहे थे, मैंने आटा गूँदने का बहुत आग्रह किया किन्तु वे नहीं माने मुझे उस दिन उनके हाथ का बना प्रसाद मिला।

सन् १९९७ में मैं अजमेर आया था उस वर्ष ऋषि उद्यान में योग साधना सेवा शिविर में भाग लेने का अवसर मिला, श्रमदान के दौरान गुरु जी भी अनचाही घास उखाड रहे थे, कोशिश के बाद भी गहरी जड वाली दूब उखड नहीं पा रही थी, मैंने आग्रह किया, और मुझसे वह उखड गई, बोले -बल है, मैंने कहा नहीं गुरुजी! आपकी अंगुलियाँ गीली होने से स्लिप हो रही थीं, जबकि मेरी अंगुलियाँ सूखी हैं, मुस्कुराये व पुनः जुट गये।

सन् १९९८ में श्री रामगोपाल गर्ग जी भी ऋषि उद्यान आने लगे थे, एक दिन दिल्ली से पधारे आर्य उद्योगपति श्री श्यामसुन्दर जी को मनसा परिक्रमा पर व्याख्यान सुनने की इच्छा हुई, उक्त दोनों सज्जनों के साथ ही सरला मेहता माताजी, रामलाल जी (सेवामुनि जी) आदि को मेरा व्याख्यान अच्छा लगा, चर्चा गुरुजी तक पहुँची कि आपके शिष्य ने कल शाम ऐसा व्याख्यान दिया कि जैसे सबकी समाधि ही लग गई, गुरुजी ने मिलते ही कहा- भो! श्वेतकेतो! बहु उचानः। नहीं गुरुजी! सब आपकी कृपा है। मोक्षराज! गर्ग साहब कह रहे थे कि कल तुम बहुत अच्छा बोले लकिन बाद में सब गुड गोबर कर दिया, कह रहे थे कि योगी कभी हँसता है क्या, यज्ञशाला से निकल कर कुछ देर बाद ही मोक्षराज जोर से ठहाके मारकर हँस रहा था। मैंने कहा-गुरुजी मैं कोई योगी तो हूँ नहीं और ऐसा योगी बनना भी नहीं चाहता जो हँस न सके।

कालान्तर में हम बहुत साथ नहीं रह सके, उनके सान्निध्य से परे रहते मुझे १४ वर्ष हो गये । इस अवधि में यदा कदा उनके व्याख्यान सुनने का सौभाग्य मिलता था। वे व्याख्यान करते तो कई बार मैं अपने मित्रों को बोलता कि अब गुरुजी का अगला वाक्य यह होगा, ऐसी घटनाओं से लोगों को यह भ्रम होता था कि मैं उनके व्याख्यान टेप कर स्मरण करता हूँ। जबकि मैंने ऐसा कभी नहीं किया। उनसे अपरिग्रह व फक्कडपंती सीखी थी। विवाह के बाद स्वामी रामेश्वरानंद हरि निर्मल पुष्कर ने मुझे एक छोटा टीवी व टेप भेंट किया था, जिसमें आज तक उनकी

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

कोई कैसेट प्रयुक्त नहीं हुई । **एक सच यह भी है कि उन्होंने मुझे कुछ भी रटाया नहीं बल्कि सोचना सिखाया, यही मेरी सबसे बडी पूँजी है। वे मेरे अभूतपूर्व गुरु थे।**

वे कुछ वर्ष से मुझसे नाराज थे किन्तु अलग नहीं थे। जब कभी मैं समाज या राष्ट्र से सम्बंधी किसी गम्भीर समस्या में उलझा रहता तो उनसे अकेले में मिलने चला जाता था। उनकी सलाह पर ही मैंने एक खतरनाक संगठनविशेष पर पुलिस की खुफिया इकाई की दृष्टि जमवायी। जिसमें कुछ षड्यंत्रकारियों को पुलिस ने पाबंद भी किया। इसी प्रकार एक अन्य घटना में भी उनका परामर्श लिया गया। हमने बहुत सी बातों को सबके साथ साझा नहीं किया था। वे मिलने पर यही पूछते कि- आजकल क्या चल रहा है?

सन् २००२ में मेरे प्रति गुरुजी के व्यवहार में अचानक बदलाव आया, जिस रहस्य को मैं वर्षों तक नहीं समझ सका था और उनकी इस उपेक्षा से बहुत परेशान रहता था। कुछ वर्ष बाद एक पारिवारिक कार्यक्रम में उन्होंने कुछ संकेत प्रकट किये थे। एक बार मेरे जन्मदिन के अवसर पर हवन के पश्चात् उन्होंने जो उद्बोधन दिया, उसमें कहा कि ''संस्कृत के महाकवि भारवि के पिता अपने पुत्र की सब ओर निन्दा किये करते थे, जबकि सारी दुनिया भारवि के अर्थ गौरव व संस्कृत भाषा पर असाधारण अधिकार से अत्यन्त प्रभावित थी। सब ओर प्रशंसक ही प्रशंसक हुआ करते थे, केवल एक मात्र उनके पिता उनकी बुराई किया करते थे। एक दिन भारवि के मन में अपने पिता को संसार से विदा करने का कुविचार उत्पन्न हुआ। उन्होंने सोचा कि मेरे पिता जब नहीं रहेंगे तो सब ओर प्रशंसक ही प्रशंसक होंगे। भारवि के पिता एक कक्ष में भोजन कर रहे थे और उनकी माता भोजन परोसते के लिये पास में बैठी हुई थी। भारवि कक्ष के द्वार पर कुल्हाड़ी लेकर छिपे हुए थे, संयोगवश उनकी माता ने पिता से पूछा कि सारी दुनिया भारवि की प्रशंसा करती है तो आप क्यों उसकी इतनी निन्दा करते हो, वह युवा है, उसके मन में विद्रोह उत्पन्न हो सकता है, आप ऐसा मत किया करो। तब उनके पिता ने कहा- मैं अपने पुत्र को और अधिक विद्वान्, प्रतिष्ठित कवि देखना चाहता हूँ। सब लोग उसे अच्छा-अच्छा कहें तो कहते रहें, लेकिन मैं यह जानता हुआ भी कि हमारा पुत्र वास्तव में एक अच्छा विद्वान् है। फिर भी मैं उसकी प्रगति की कामना से उसकी प्रशंसा नहीं करता। मैं उसे और बढ़ता हुआ देखना चाहता हूँ।

इस पूरे संवाद को भारवि सुन रहे थे। वे लज्जित हुए। उन्होंने विचार किया कि मैंने अपने पिता को मेरे प्रतिकूल व कठोर हृदय वाला समझा था किन्तु वे तो मेरे सच्चे शुभचिन्तक और पालक हैं, यह सोचकर उन्होंने कुल्हाड़ी को पटक दिया और अपने पिता के पैरों में गिर पड़े।''

उक्त प्रकरण को सुनाकर गुरुजी ने मुझे वर्षों पहले अपने मूलभाव से परिचित करा दिया था। उनका यह अपनापन व शिष्य के प्रति गहरा अनुराग अन्य लोगों को कभी दिखाई नहीं दिया। कुछ वर्ष पहले अजमेर के श्री विजय सोनी जी के घर पर उन्होंने यजुर्वेद पारायण यज्ञ कराया। तब सोनी जी ने उनसे मेरे विषय में संवाद किया, वे बोले कि नि:सन्देह मोक्षराज आर्यसमाजों के सिद्धान्तों के अनुरूप बुद्धिमानीपूर्वक अच्छे काम कर रहा है, किन्तु यह सारे काम वह पूछकर भी तो कर सकता है। उन्होंने इस संवाद के द्वारा मेरे प्रति आत्मीय भाव को वर्षों बाद पुन: प्रकट किया। मैं सदैव उनका ऋणी रहूंगा।

संस्कृत एवं संस्कृति के प्रति जो उनका विलक्षण समर्पण भाव था, उसके लिये वे देशी-विदेशी ताकतों से भी निर्भीकतापूर्वक लड़ने का जज्बा रखते थे। **उनकी यह स्पष्ट मान्यता थी कि जब तक हम स्वभाषा, स्वदेशी, वेशभूषा, आर्ष शिक्षा पद्धति व वैदिक ग्रन्थों का आधार लेकर जीवन नहीं जीयेंगे, तब तक भारत का उत्थान सम्भव नहीं होगा।** हाल ही में उनके प्रयत्न से

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व व कृतित्व को आधार मानकर भारत सरकार की प्रेरणा से यूजीसी ने समस्त केन्द्रीय एवं राज्यीय विश्वविद्यालयों में दयानन्द चेयर स्थापित करने का आदेश दिया है, इस कार्य में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। उन्होंने इस भौतिक जगत् से जाते-जाते एक अद्वितीय उपलब्धि को हमारे सामने रखा है। उनका जीवन वेद प्रचार-प्रसार करते हुए रात-दिन बस-रेल आदि में यायावर की भांति व्यतीत हुआ, जिसके कारण वे अपने स्वास्थ्य पर नियमित रूप से ध्यान नहीं दे सके और असमय में हम सभी को छोड़कर संसार से विदा हो गए। वे गृहस्थ में रहकर भी एक सन्त थे। वे आर्ष परम्परा के सुदृढ़ स्तम्भ थे, उन्होंने हजारों सच्चे विद्यार्थी, राष्ट्रभक्त व संस्कृति रक्षकों को निर्मित किया, वे आदर्श शिक्षक थे। हम सभी उनके प्रति कृतज्ञ हैं। उन्हें हमारा भाव भरा कोटिशः नमन्।

-अजमेर (राजस्थान)

आर्यसमाज के पुरोधा : विरला व्यक्तित्व डॉ.धर्मवीर

- विकास शास्त्री

आर्यसमाज के सिद्धान्तों की गरिमा अर्थात् व्यावहारिक-पक्ष के प्रत्यक्ष प्रमाण की प्रतिमूर्ति श्रद्धेय गुरुवर डॉ. धर्मवीर जी की आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

आप गुरुकुल झज्जर हरियाणा के यशस्वी स्नातक व स्वामी दयानन्द निर्दिष्ट वैदिक सिद्धान्तों के आजीवन सजग-प्रहरी रहे। मुझे आपका प्रथम दर्शनलाभ गुरुकुल झज्जर के प्रांगण में ही वार्षिकोत्सव २०००-२००१ में हुआ। आपनें गुरुकुल-स्नातक की गरिमा विषय से हम नूतन ब्रह्मचारियों को उद्बोधित व उत्प्रेरित किया। आपसे व्यक्तिगत-विस्तृत-विचारविनिमय का अवसर २०१० में मुम्बई महानगर के आर्यसमाज सान्ताक्रुज़ में मिला, जब आप डॉ. सोमदेव, वैदिक मिशन मुम्बई के सौजन्य में आयोजित अथर्ववेद सम्मेलन में सम्मिलित होने आर्यसमाज काकडवाडी में थे। गोष्ठी के प्रथमदिवस के अन्तिमसत्र के अवसान पर आपकी आवासीय व्यवस्था का दायित्व आर्यसमाज सान्ताक्रुज़ में मुझे सम्पादित करना था। अतः सान्ताक्रुज़ के अतिथिकक्ष में गुरुकुलीय शिक्षा व समाज की उन्नति आदि विषय पर सामान्य परिचर्चा करते हुए शयन से पूर्व आदरणीय आचार्य जी ने मुझे शयनकालीन मन्त्रोच्चारण करने को कहा फिर आपने शिवसंकल्पमंत्रों की व्याख्या स्वयं करते हुए सत्विचारों की सर्जना व आर्षमन्तव्यों को पोषित करने की अभिप्रेरणा की। आप सदा निभीक, स्पष्ट व सद्य-प्रत्युत्तर दाता रहे।

ऋषि उद्यान अजमेर में परोपकारी पत्रिका का ग्राहकत्व करते हुए डॉ. साहब ने कहा प्रिय विद्यार्थी सुना है हरिप्रभा के सम्पादन का कार्य गुरुकुलस्नातक करता है। मैनें अंगीकार किया तो बोले बेटा सम्पादक का निष्पक्ष, प्रखरबुद्धि, राष्ट्रवादी, ऊहा व सर्जना की संकल्पना आदि सुसम्पन्न होना अनिवार्य है। तुम्हें ऋषि ग्रन्थों व शास्त्रों में सतत स्वाध्यायी होना पड़ेगा। मैंने कहा गुरु जी पूर्णरूपेण प्रयास करूँगा।

आप भौतिकरूप में न सही पर सर्वदा सिद्धान्तों में जीवित रहते हैं। आपकी प्रेरणा मेरे जैसे असंख्य सम्पादकों की संजीवनी है।

आप प्रायः कहा करते थे कि बड़ाई (प्रशंसा) व मिठाई सबको अच्छी लगती है, पर मधुमेह के रोगी सावधान रहें, यहाँ रोगी से आपका आशय सिद्धान्तों में प्रमादी से था। आप जैसा विभिन्नशास्त्रों में विशुद्ध-विज्ञ विरला ही दृष्टिगत होता है। आर्यसमाज व गुरुकुल परम्परा के आप पुरोधा हैं। यह राष्ट्र पुनः आपके पुनर्जन्म की कामना करता है।

-पूर्वच्छात्र, गुरुकुलपौन्धा, देहरादून

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

हमारे प्रेरणास्रोत - प्रो. धर्मवीर जी

❑ शिवदेव आर्य... ✍

हमारे देश की अपनी एक निराली ही विशेषता रही है कि समय-समय पर आयी हुई कुरीतियों, पाखण्डों व अन्धविश्वासों को अपने वेद ज्ञान से नष्ट करने वाले सत्य तथा वेद के पथप्रदर्शक महापुरुषों का जन्म इस धरा पर होता रहा है, जो देश को जागरुक करने के लिए कृतसंकल्प रहते थे। दिन हो या रात, परिस्थिति अनुकूल हो या प्रतिकूल उन्हें कोई असर नहीं होता, जब वेदज्ञान से आप्लावित वेदज्ञ **न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः** को सदैव स्मरण करते हुए जब अपना मार्ग प्रशस्त करते हैं तो सम्पूर्ण भूमण्डल नतमस्तक हो जाता है।

ऐसे ही वेदधर्म के धर्मवीरों में डॉ. धर्मवीर जी का नाम भी स्मरणीय है। जो समाज के गौरव, आर्षज्ञान शिरोमणी, वैदिक सिद्धान्तमर्मज्ञ, भाषाविज्ञ, प्रखर प्रवक्ता थे, जिन्होंने वेद तथा ऋषिवर देव दयानन्द में अगाध श्रद्धा रखते हुए अर्हर्निश अपनी लेखनी से अतुलनीय योगदान दिया है, वह अद्वितीय है। अपने प्रभाव से बुद्धिजीवियों को आर्यावर्त के प्राचीन गौरव से भारतीय अस्मिता पर गर्व करा दिया। इसको देखकर लगता है कि आर्य समाज तथा ऋषिवर देव दयानन्द के अनुपम सन्देश के ध्वजवाहकों की भूतकाल में न कोई कमी थी, न वर्तमान में है और न भविष्य में होगी।

वैदिक धर्म-दर्शन-संस्कृति-साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित प्रसिद्ध सिद्धहस्त लेखक तथा विचारक का दिनांक ५ अक्टूबर 2016 को प्रातः ५:०० बजे अजमेर के एक अस्पताल में आकस्मिक देहावसान हो गया। डॉ. धर्मवीर जी ने ऋषि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के अधिकारी के रूप में दीर्घकाल तक परोपकारिणी सभा और आर्यसमाज की सेवा की। आपके कार्यकाल में सभा ने सभी क्षेत्रों में बहुमुखी प्रगति की। सभा की पाक्षिक प्रसिद्ध पत्रिका 'परोपकारी' के आप अनुभवी सम्पादक थे, जिसके प्रत्येक अंक में राष्ट्रिय मुद्दों पर वेद और आर्यसमाज को दृष्टिगत कर लिखे गये आपके सम्पादकीय आर्यजनता में रूचिपूर्वक पढ़े जाते थे।

आपके अप्रत्याशित निधन से आर्यसमाज की अपूर्णनीय क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति होना सम्भव नहीं है। समूचा आर्यजगत इस क्षति से शोकसागर में संलिप्त है।

गुरुवर्य से मेरा साक्षात्सम्बन्ध तो कुछ ही एक वर्षों से बना किन्तु गुरुकुल में सन् २००६ से ही अध्ययनकालक्रम में गुरु जी का नाम बहुत सुना था किन्तु मुझे नहीं पता था कि वे कौन हैं? क्या करते हैं? तथा उनकी क्या विशेषता है।

गुरु जी की विशेषता का भान मुझे उस दीपावली पर हुआ जिस दिन मेरा प्रथम सम्पादकीय पढ़कर हमारे आचार्य श्री डॉ. धनञ्जय जी ने मुझे कहा कि यदि सम्पादकीय लिखना सीखना है तो धर्मवीर जी का सम्पादकीय पढ़ा करो और उनकी ही शैली का अनुकरण करो। फिर मैंने आर्यसमाज की प्रिय पत्रिका 'परोपकारी' के सम्पादकीय को इंटरनेट पर पढ़ा। सम्पादकीय पढ़कर मैं लेख का आशय नहीं समझ पाया, क्योंकि उस लेख को समझने की मुझ में योग्यता नहीं थी। उस दिन के बाद से मैं गुरु जी के बारे में जानने लगा।

२०१३ में आर्यसमाज धामावाला देहरादून का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा था। इस उत्सव की शोभा डॉ. धर्मवीर जी थे। ऐसे में हमारे आचार्य धनञ्जय जी ने हमें कहा कि कौन-कौन धामावाला चलेगा? हमारी श्रेणी के छात्रों ने हाथ खड़ा करके अपनी इच्छा व्यक्त की। आचार्य जी हमारी तथा हमसे नीचे वाली श्रेणी को लेकर आर्यसमाज में पहुँचे। उस दिन सम्भवतः

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

मैंने इतने समीप से गुरु जी को पहली बार देखा था। कुछ ही देर बाद गुरु जी का प्रवचन शुरु होने ही वाला था, गुरु जी ने कहा कि मैं आज प्रवचन नहीं करूँगा। आज तो अपने प्यारे विद्यार्थियों से बात-चीत करूँगा। हमसे प्रश्नोत्तर किये। इस शृंखला के पश्चात् आचार्य जी हम सब विद्यार्थियों को साथ लेकर मंच पर धर्मवीर जी के पास ले गये और वार्तालाप किया। हमने बहुत से प्रश्न भी किये, जिसके सन्तोषजनक उत्तर पाकर हम बहुत आनन्दित हो रहे थे।

गुरु जी से व्यक्तिगत रूप से मिलने का सौभाग्य मुझे २०१५ के ऋषि मेले पर प्राप्त हुआ। मेरे जाने का कोई निश्चय नहीं था। हमारे आचार्य जी ने मुझे बताया कि बेटा! अजमेर में वेद की संगोष्ठी हो रही है, तू क्यों नहीं चला जाता? मैंने आचार्य जी से कहा ठीक है, तैयारी कर लेता हूँ। तभी मैंने लक्ष्मण जिज्ञासु जी से सम्पर्क कर यात्रा का सन्देश दिया तथा वेद संगोष्ठी के विषय में पूछा-लक्ष्मण जी ने कहा कि मैं धर्मवीर जी से पूछ लेता हूँ एवं आप भी एकबार सम्पर्क कर लो। मैंने धर्मवीर जी से दूरभाष द्वारा सम्पर्क किया। गुरु जी ने फोन उठाते ही कहा-आपके दूरभाष का ही इंतजार कर रहा था। आपको तो हमने स्वीकृति दे ही दी है किन्तु अपने आचार्य जी से आज्ञापत्र साथ ले आना। मैंने कहा ठीक है, मैं बहुत खुश हुआ।

मैं यात्रा की तैयारी करने लगा। लेख लिखने हेतु पुस्तकालय में गये। बहुत कुछ पढ़ा पर कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या लिखूँ। रात्री बहुत हो गयी थी, नींद भी आने लगी और मैं सो गया। प्रात:काल मैं शीघ्र उठकर लिखने बैठ गया और यथासामर्थ्य यथासमयानुसार कुछ लिख लिया। आचार्य जी की आज्ञा प्राप्त कर आज्ञापत्र लेकर मैं ९ बजे देहरादून से निकल गया। रात्री को अजमेर पहुँचकर बसस्थानक से ऋषि उद्यान पहुँचा वहाँ लक्ष्मण जी मिल गये। प्रात:काल लक्ष्मण जी ने धर्मवीर जी से मिलाया। गुरु जी ने हँसते हुए कहा - आ गया तू नेतृत्व करने और कोई नहीं आया । इसके बाद मेरा परिचय तथा गुरुकुल की व्यवस्था के बारे में पूछा।

बस यहीं तक का मेरा सफर भौतिकरूप से गुरु जी के साथ रहा किन्तु आपकी लेखनी का मैं सदा अनुकरण कर सदा आपको याद करता रहूँगा।

इस संसार से कोई यदि जाता है तो दु:ख तो स्वभाविक है किन्तु ऐसा भी नहीं है कि संसार में जिसने जन्म लिया हो और उसकी मृत्यु न हुई हो, ये तो अवश्यम्भावी है, इसे कोई कैसे टाल सकता है। इसलिए भर्तृहरि जी लिखते हैं कि- **'परिवर्तिनी संसारे मृत: को वा न जायते। स जातो येन जातेन याति वंशसम्मुन्नतिम्।** अर्थात् इस परिवर्तनशील संसार में जिसने जन्म लिया है उसका मरण तो निश्चित है लेकिन जन्म लेना उसी का सार्थक है, जो जन्म लेकर जन्म को सार्थक कर दे।

मैं भी आप जैसे वैदुष्य व सामर्थ्य को प्राप्त हो सकूँ ऐसा मेरा प्रयत्न रहेगा। इन्हीं शब्दों के साथ इति ओम्...

- गुरुकुल पौन्धा,
देहरादून

वयं राष्ट्रे जाग्रयाम पुरोहिता (यजुर्वेद-२.२३)

(वयम्) हम (राष्ट्रे) देश में (जाग्रयाम) जागें, सावधान हों (पुरोहित) आगे ले जाने वाला बनकर।

हम अपने देश में सावधान होकर पुरोहित अगुआ बनें।

May we remain awake as leadedrs in our kingdom.

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

वैदिक सिद्धान्तशिरोमणी - डॉ. धर्मवीर

❑ सत्यपाल 'सरल'...✍

आर्य समाज के गौरव, आर्षज्ञान शिरोमणी, वैदिक सिद्धान्तमर्मज्ञ, भाषाविज्ञ, प्रखर प्रवक्ता, महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारीणी सभा के आदरणीय अध्यक्ष आचार्य डॉ. धर्मवीर जी के अकस्मात् पञ्चत्वलीन होने से सभी अवाक् रह गये। माननीय डॉ. धर्मवीर जी का विच्छोह, उनका यूँ अचानक चले जाना वर्तमान में आर्य समाज के लिए भयंकर दुर्घटना है, ऐसा साधक, स्वेतवस्त्रों में सच्चा सन्त, वेद मनीषि, निस्वार्थी, सत्य का पुजारी, जिसका पाखण्डी-प्रपञ्चियों, अन्धविश्वासियों को सत्य का बोध एवं सत्य की स्थापना करना मुख्य लक्ष्य रहा, ऐसा निड़र-निर्भीक सत्यवक्ता सत्यान्वेशी नहीं मिलेगा।

गत पन्द्रह अगस्त को लालकिले की प्राचीर से बोलते हुए प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि 'वेद से विवेकानन्द' इस वाक्य को सुन कर डॉ. धर्मवीर तिलमिला गये और कहा कि विवेकानन्द का वेद से कोई सम्बन्ध ही नहीं, उन्होने अपनी वेदना को सत्य निष्ठा के साथ परोपकारी पत्रिका में व्यक्त किया। डॉ. धर्मवीर जी सत्य की प्रतिष्ठा के आग्रही थे, उन्होने प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी के उक्त वक्तव्य का दृढ़ता पूर्वक खण्डन किया। उनकी बड़ी विशेषता अपने सम्पादकीय के माध्यम से स्वस्थ समालोचना थी। उनकी विद्वत्ता, स्पष्टता, तेजस्विता, कर्तव्यपरायणता, विपरीत परिस्थिति में भी धैर्यपूर्वक कार्य करते रहने की साहसिक विलक्षण क्षमता रखती थी।

नागौर जनपद (राजस्थान) डीड़वाना के समीप कोलिया गाँव में आर्य समाज का उत्सव था, अन्तिम दिन प्रातः स्नानागार में स्नान के दौरान खड़े होते समय पानी की टोंटी जोर से सर में लगी, खून बहने लगा, स्नानागार से कमरे में आये तो मैंने देखा सर से खून बह रहा है, मैंने पूछा-आचार्य जी आपके सर में चोट कैसे लगी? बहुत खून बह रहा है। बोले-कुछ हुआ है, एकबार आँखे बन्द हो गई थी, लेकिन मैं अब ठीक हूँ, जैसे कुछ हुआ ही नहीं, ऐसे कहते गये। कार्यक्रम स्थल पर स्नानागार आदि की भी व्यवस्था नहीं थी, बड़ी कठिन स्थिति में प्रथम दिन ही हमारे सहयोगी श्री नरदेव जी स्नान करके कमरे में आये तब वह ठण्ड के कारण बुरी तरह काँप रहे थे। आचार्य जी तुरन्त बादाम-पिस्ता-किसमिस अपने थेले से निकाल लाये और बोले इन्हें खाईयें ठण्ड भाग जायेगी। **देखों! हम सबको स्वास्थ्य का ध्यान रखना आवश्यक है। वैदिक धर्म के प्रचार हेतू स्वस्थ रहकर ही ऋषिमिशन का कार्य कर सकेगें, आर्यों में अब पहले-सी उदारता व समझ**

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

नहीं रह गई, जो अपने उपदेशकों को सम्भाल सकें, जो रात-दिन अपने घर परिवार को छोड़ सत्य के स्थापन में ही लगे रहते हैं।

आचार्य धर्मवीर जी का मेरे प्रति अत्यधिक स्नेह था। मैंने आचार्य जी से निवेदन किया कि मेरे पुत्र का विवाह है आपका आशीर्वाद नवदम्पत्ति को प्राप्त हो ऐसी मेरी प्रबल इच्छा है, आचार्य जी बोले - सरल जी! आपका आमन्त्रण स्वीकार है। मुस्करा कर बोले-इस विवाह कार्यक्रम में आप भी रहेंगे? मुझे तिथि बता दीजिए। अवश्य पहुँचने का प्रयत्न करुँगा। मैंने आचार्य जी को तिथि-वार सब उनकी डायरी में नोट करा दिया। यह विवाह से लगभग चार माह पूर्व की बातें हैं, संयोग से मैं अपनी व्यस्तता के कारण आचार्य जी को पुनः स्मरण नहीं करा सका किन्तु आचार्य जी पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के साथ उनकी गाड़ी से विवाह समारोह में उपस्थित हो गये। मान्य डॉ. साहब की यह उदारता देख मुझे एवं परिवार के सब सदस्यों को सुखद अनुभूति हुई। विवाह संस्कार में लगभग पन्द्रह विद्वानों की उपस्थिति से सब गौरवान्वित हो रहे थे, विद्वानों का सम्मान करने का अवसर बड़े सौभाग्य से मिलता है। अपनी सामर्थ्यानुसार सबको दक्षिणा देने के क्रम में मैंने जब आचार्य जी को दक्षिणा देनी चाही - आचार्य जी तुरन्त बोले आपने तो मुझे कहा था कि नवदम्पत्ति को आशीर्वाद देना है फिर इसमें लेना तो है नहीं और देखो मैं यहाँ अपने पुत्र के विवाह में आया हूँ, उस बड़प्पन, उस उदारता की क्या प्रशंसा करुँ, बड़ा विशाल हृदय पाया था।

यह जीवन बड़ा अमूल्य है। इसका आना-जाना परमात्मा की व्यवस्था के अन्तर्गत है परन्तु कभी दुःख व्यक्त एवं पश्चाताप करने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं चलता। जैसा कि आचार्य जी कभी-कभी कहा करते थे कि 'अब आर्यों में पहले-सी उदारता व समझ नहीं रही, जो अपने विद्वानों को सम्भाल सकें' यह अकाट्य सत्य था। संयोग से आचार्य जी के साथ जैसा वे कहा करते थे वैसा ही हुआ। यह सोचनीय अवस्था है, आचार्य डॉ. धर्मवीर जी जिस आर्यसमाज के उत्सव पर थे, वहाँ वे दो दिनों तक न यज्ञ करा सके न प्रवचन कर सके। भयंकर रूप से अस्वस्थ हो गये लेकिन उन अनुदार कंजूस दिल वाले लोगों का हृदय नहीं पसीजा कि दिल्ली जैसा शहर हमारे समीप है आचार्य जी को तुरन्त ले जाकर चिकित्सा करायें। उन्हें तो अपने कार्यक्रम की सफलता-असफलता अत्यधिक मुख्य थी। आर्यत्व से दूर हृदयहीन जो उपदेशकों की उपेक्षा ही अपना मुख्य धर्म मानते हों फिर वे ऐसी उदारता क्यों दिखाते? इन भले लोगों ने डॉ. धर्मवीर जी को लम्बी यात्रा अजमेर तक करने को अकेला छोड़ दिया। इससे ज्यादा क्रूर व्यवहार और क्या होगा?

डॉ. साहब के देहावसान के बाद अजमेर पहुँचने पर उनकी धर्मपत्नी मान्या बहन ज्योत्सना जी एवं ऋषि उद्यान में कार्यालय का कार्य सम्भाल रहे श्री वासुदेव जी ने बताया कि जब अस्पताल ले जाने के लिए कार में बैठाने लगे उस समय आचार्य जी एक शब्द बोले - **'हम तो चले ऋषि के रस्ते'**। इसके बाद कार की सीट पर बैठकर वहाँ खड़े सभी आत्मीय जनों की ओर देखा और हाथ उठा कहा - **'धैर्यं धैर्यं'**। वह दिव्य पुरुष गया तो बस चला गया, ऐसा लगता था जैसे इन वाक्यों के पीछे कोई सन्देश हो, उस महामानव का आना भी प्रेरणाप्रद था और जाना भी दिव्य प्रेरणा प्रद था। इस महान् आत्मा को परमात्मा सद्गति प्रदान करे और आर्यों को उनके वियोगजन्य दुःख से त्राण मिले एवं उनके संघर्षशील पवित्र जीवन से पवित्रता-चरित्रता की अमर शिक्षा प्राप्त करे, उनके शेष रह गये वैदिक सिद्धान्त प्रचार-प्रसार के कार्य को पूर्ण करने का संकल्प लें, आचार्य जी के प्रति ये ही सच्ची श्रद्धाञ्जली होगी।

-२४६ नयी बस्ती पार्क रोड़,
देहरादून

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

सजग धर्म प्रहरी : डॉ. धर्मवीर

❑ लक्ष्मण जिज्ञासु...✍

ऋषि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के ११ वे समुल्लास में लिखते हैं कि – जब सच्चा उपदेशक न रहा तब आर्यावर्त में अविद्या फैल कर परस्पर में लड़ने झगड़ने लगे क्योंकि **'उपदेश्योपदेष्टत्वात् तत्सिद्धिः इतरथान्धपरम्परा'**।

अर्थात् जब उत्तम-उत्तम उपदेशक होते हैं, तब अच्छे प्रकार धर्म अर्थ काम और मोक्ष सिद्ध होते हैं और जब उत्तम उपदेशक और श्रोता नहीं रहते तब अंधपरम्परा चलती है। फिर भी जब सत्पुरुष उत्पन्न होकर सत्योपदेश करते हैं तभी अंधपरम्परा नष्ट होकर प्रकाश की परम्परा चलती है।

इसी के साथ ऋषि ने पूना में अपने संक्षिप्त जीवन विवेचन के विषय में कहा है कि – आर्य धर्म की उन्नति के लिए मुझसे बहुत से उपदेशक आप के इस देश में उत्पन्न होने चाहिए।

आचार्य धर्मवीर जी ऋषि के इन्हीं शब्दों को सार्थक करते ऋषि भक्त वेदज्ञ, नीतिकार राष्ट्रहित के लिए समर्पित, भविष्यद्रष्ट्रा, परोपकारी, दानवीर पुण्यात्मा हृदयस्पर्शी लौह लेखनी के धनी थे, जिन्होंने ऋषि के सपनों को यथार्थ रूप देने के लिए अपने जीवन को नि:स्वार्थ भाव से समर्पित कर दिया।

आचार्य धर्मवीर जी ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त वेदोक्त सिद्धांतों पर पूर्णरूपेण अडिग, आर्यत्व की साक्षात् प्रतिमूर्ति और उसके प्रबल प्रस्थापक थे।

वैदिक धर्म, साहित्य, इतिहास, राजनीति आदि के चलते फिरते ज्ञानकोष धर्मवीर जी ने अपना जीवन आर्य समाज को पुन: स्वर्णिम अतीत की ऊँचाई तक प्राप्त कराने के लिए उत्सर्ग कर दिया। प्रा राजेन्द्र जिज्ञासु जी प्राय यह कहा करते हैं कि आर्य समाज ने विद्वान तो कई पैदा किये लकिन मनीषी दो ही पैदा किये एक पण्डित गुरुदत्त और दुसरे पण्डित चमूपति जी लेकिन मेरे सजल नयन इस प्रबल धारणा को जन्म देते हैं कि आगे से जिज्ञासु जी तीन मनीषियों का जिक्र किया करेंगे।

धर्म रक्षक – आचार्य धर्मवीर जी धर्म रक्षार्थ सदैव उद्यत रहते थे। वैदिक धर्म पर कहीं से भी प्रहार हो उनकी आत्मा तड़प उठती थी, उनके नेतृत्व में इस तरह के धर्म के आक्षेप के समय आर्यजनों का परोपकारिणी पत्रिका से आशा करना स्वाभाविक स्वभाव हो गया था।

वेंडी डोनिगर, शेल्डन पोलाक के वैदिक धर्म संस्कृति की निंदा और निकृष्ट सिद्ध करने के दावों को आपके लेखों ने धुल धूमिल करके रख दिया।

सजग धर्म प्रहरी – आर्य समाज की शिथिलता के इस दौर में आप सजग धर्म प्रहरी की भूमिका का निर्वाह कर रहे थे। धर्म पर भारतवर्ष में हो रहे आक्रमण का तो प्रति उत्तर दिया जाए ये तो आप सुनिश्चित करते ही थे अपितु विधर्मी विदेशी की कुटिल कार्यकलापों पर सजग निरंतर दृष्टि रखना, उनके साहित्य का अध्ययन करना और उनका जवाब देना आपका एक विलक्षण स्वभाव था, जो आजकल दृष्टिगोचर नहीं होता।

शेल्डन पोलाक जहाँ मैक्स मुलर की राह पर चल कर वैदिक इतिहास को दूषित करने का कार्य कर रहा था तो आपने अपनी लौह लेखनी से उसे ललकारना प्रारम्भ कर दिया और न केवल एक के बाद एक कई लेख आपने इस सम्बन्ध में लिखे अपितु इस सम्बन्ध में अन्य लोग जो कार्य कर रहे थे उनसे संपर्क करना और उन्हें परोपकारिणी सभा से जोड़ने आदि के कार्य में वो अनवरत लगे रहे। यशवन्त मेहता जी और लेखक को निरन्तर इस सम्बन्ध में कार्य करने के लिए वो प्रेरित करते रहे। देहावसान से २ दिन पूर्व आपकी यशवन्त जी और मेरी हुयी लम्बी दूरभाष चर्चा अब केवल अतीत ही रह गयी है।

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

विभिन्न भाषाओं में वैदिक धर्म के प्रचारक बनाना – वेद ज्ञान से विभिन्न विदेशी भाषाओं के लोगों को लाभान्वित करवाना, वैदिक धर्म पर अन्य भाषाओं में हो रहे प्रहार का प्रतिउत्तर देने के लिए आप विभिन्न भाषाओं में इस हेतु प्रचारक तैयार करने के लिए लगनशील थे। यशवन्त जी से आपका इस सम्बन्ध में विचार विमर्श होता रहता था और आपने उर्दू पढने के लिए दो छात्रों को कश्मीर भेज दिया। जब वहाँ आरम्भ में आवास व्यवस्था के प्रबन्ध होने में कठिनाई का आभास हुआ तो आपने ये कहने में क्षणिक विलम्ब नहीं किया कि व्यय की चिंता न हो यदि कहीं से आवास का प्रबन्ध नहीं होता तो भी अध्ययन का कार्य न रुके सभा पूरा खर्च उठायेगी। आपकी इसी लगन की वजह से ही दो छात्र उर्दू भाषा का अध्ययन कर पाए। आशा है जिस स्वप्न को लेकर आचार्य जी ने ये किया था ये मेधावी ब्रह्मचारी उस लक्ष्य को अवश्य पूरा करेंगे। अन्य कुछ पश्चिमी देशों की भाषाओं को सीखने के लिए भी आप ब्रह्मचारियों को दिल्ली भेजने की योजना बना रहे थे लेकिन इस व्यथा का हम पर आघात होगा, ये किसे पता था?

निर्भयता की मूर्ति – ऋषि दयानन्द को जब कुछ हितैषियों ने जोधपुर जाने से रोकने का प्रयास किया तो ऋषि का उत्तर था – 'भले ही मेरी उँगलियों को मोमबत्ती बनाकर जला दिया जाये .....'

ऋषि दयानन्द की इसी निर्भयता की प्रतिमूर्ति आप थे। सत्य को दृढ़ता पूर्वक निर्भयता से कहने का आपका यह व्यवहार आपको जन सामान्य से पृथक् कर सूर्यसम प्रकाशित करता था। किसी भी धर्म, नीति विरुद्ध कथन व्यवहार के प्रतिकार करने में आप कभी पीछे नहीं हटे। आपके प्रतिउत्तर तीक्ष्ण होते थे, जिसकी शैली जहाँ दोषी को निरुत्तर करती थी वहीं धर्मानुचारियों को आपकी ये शैली प्रफुल्लित किया करती थी और यही वो कारण था जिसकी वजह से धर्म पर आघात के समय सभी का ध्यान परोपकारिणी पत्रिका के सम्मुख ही होता था आपके इसी गुण के कारण परोपकारिणी पत्रिका को धर्मप्रेमियों के बीच लोकप्रियता प्राप्त हुयी और उसके पाठकों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुयी।

आपसे एक बार लेखक ने पूछा था कि लोग प्रायः खण्डन को पसन्द नहीं करते और आप जहाँ आवश्यकता जान पड़े खंडन रुपी शैल्य चिकित्सा से पीछे नहीं हटते तो आपने कहा था जिस संस्था के जीवन मरण का प्रश्न हो वह किसी के नाराज होने या न होने की चिंता नहीं किया करते बल्कि अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए आवश्यक नीतिगत प्रयास किया करते हैं।

आपके जीवन की अनेक घटनाएं आपके इस निर्भीक व्यक्तित्व की गवाही देती हैं। आपका व्यक्तित्व एक ऐसे धर्म योद्धा का था, जिसने ऋषि के उद्देश्य की पूर्ति के लिए अनेक संकटों का सामना किया। विपत्तियों को निर्भयता से झेला लेकिन कभी पथ से विचलित नहीं हुए।

आप एक महापुरुष थे इसमें कोई संदेह नहीं ब्रह्मचर्य, तप, पांडित्य, दीर्घदर्शिता, लोकहितैषिता आदि गुणों को अपने व्यक्तित्व में समाहित किये धर्मरक्षा के लिए आप एक नर नाहर की भांति गर्जना किया करते थे आर्य समाज आपको पाकर धन्य था।

मेरे पुत्र का नामकरण संस्कार करवाते हुए मेरे अग्रज को आचार्य जी ने कहा था कि यह संसार उन्ही को याद रखता है जो परोपकार में अपना जीवन समर्पित कर देते हैं। हे आचार्य प्रवर! यह सत्य ही है आपके जीवन भर धर्म संस्कृति के लिए किये गए तप को समाज सदियों तक याद रखेगा। आप काल कलवित नहीं हुए हैं वेद के प्रचार-प्रसार, ऋषि भक्ति, धर्म रक्षा के लिए तत्पर, निर्भीक अविचल व्यक्तित्व से कितनी ही पुण्य आत्मायें प्रभावित होती रहेंगी और अपने जीवन को सार्थक करेंगी। पण्डित लेखराम वैदिक मिशन के आरम्भ से ही आप हमारे पथ प्रदर्शक रहे हैं। आपके स्वप्नों को साकार करने के लिए मिशन अवश्य प्रयासरत रहेगा।

-पण्डित लेखराम वैदिक मिशन

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

हमारे प्रेरणास्रोत - प्रो. धर्मवीर जी

❑ गौतम आर्य... ✍

संसार में अनेक बहुमूल्य पदार्थ है, उनमें मानव जीवन श्रेष्ठ और अमूल्य है। यह भगवान् की सर्वोत्तम देन है। महर्षि वेदव्यास ने महाभारत में कहा है -

'नहि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्'

अर्थात् मनुष्य से कुछ दूसरा श्रेष्ठ नहीं है सबसे श्रेष्ठ मनुष्य ही है। हमें इतना सुन्दर शरीर दिया है और हम जीवन भर इसी शरीर से व्यवहार करते है और कालान्तर में जब शरीर काम करते-करते रूक जाता है तो हम लोग उसे इस शरीर की मृत्यु कह देते हैं, आचार्य वार्ष्यायणि पदार्थों के अस्ति, जायते, विपरिणमते, वर्धते, अपक्षीयते और विनश्यति इन षड्भावविकारों को मानते हैं। अतः सभी का अन्त होना आवश्यक है।

नीतिकार कहते हैं कि **'कालः पचति भूतानि'** काल (समय) सभी भूतों को धीरे-धीरे पका रहा है अर्थात् सभी को मृत्यु की ओर लिये जा रहा है। वेद कहता है - **लोकोऽयं निधनम्** मृत्यु जीवन का अटल विधान है। यह जगत मरने के लिए है। सभी को एक दिन जाना है।

श्रीकृष्ण जी ने गीता में कहा है -

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च

जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु अवश्य होगी। जो मृत हुआ है, उसका जन्म भी निश्चित रूप से होगा, जिसका आरम्भ है उसका अन्त भी है।

परन्तु इस जन्म तथा मृत्यु के पाशों के बीच में कौन जीवित रहता है तो नीतिकार कहते हैं कि **'कीर्तिर्यस्य स जीवति'** अर्थात् जिसकी कीर्ति जीवित है वास्तव में वही व्यक्ति जीवित रहता है, बाकि सब तो मरों के समान जीवन जी रहे हैं। आचार्य श्री डॉ. धर्मवीर जी (गुरु जी) के श्री चरणों में बैठकर उनकी विद्या आचमन करने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ। मैंने गुरु जी को बहुत ही नजदीक से देखा था। वो त्याग, तपस्या तथा सादगी की प्रतिमूर्ति थे, ऐसा लगता था कि जैसे त्याग, तपस्या और सादगी का दूसरा नाम ही डॉ. धर्मवीर है।

महर्षि दयानन्द तथा वेदों में अगाध श्रद्धा तथा प्रेम था जो प्रतिक्षण प्रदर्शित होता था। गुरु जी बहुत ही हँसमुख व्यक्ति थे, प्रत्येक शास्त्रीय बात को वे हँसते-हँसते समझा देते थे। वो एक निर्भीक वक्ता, लेखक तथा एक कुशल सम्पादक थे।

जब हम लोग ऋषि उद्यान (अजमेर) में निरुक्त का अध्ययन करते थे, तब हम लोगों की बृहत् देवता पढ़ने की इच्छा हुई। हम लोगों ने गुरु जी से बृहद् देवता पढ़ाने के लिए निवेदन किया तो उन्होंने हँसते-हँसते उत्तर दिया कि तुम लोग कहते हो तो 'पन्ने पलट लेते हैं वैसे मुझे कुछ आता-जाता नहीं है।'

यह उत्तर उनकी विनम्रता की पराकाष्ठा को प्रदर्शित कर रहा था। एक दिन 'बृहद् देवता' पढ़ाते समय गुरु जी ने अपने जीवन की बहुत ही रोचक घटना बताते हुए कहा कि मैंने ऋषि उद्यान में गुरुकुल को प्रारम्भ किया था तब एक सेठ जी ने गुरुकुल के लिए दान दिया था परन्तु कालान्तर में किन्हीं कारणवश जब कोई छात्र गुरुकुल में नहीं रहा और सेठ जी को यह बात मालूम हो गयी। गुरुकुल में कोई छात्र नहीं है तो उन्होंने अपना दान वापस मांगना शुरु कर दिया परन्तु वो दान कैसे वापस हो सकता था, अतः वो दान उनको वापस नहीं मिला। इसी कालक्रम से ऋषि मेला भी आ पहुँचा और ऋषि मेला के समायोजन के लिए रुपयों की आवश्यकता थी तो उसके लिए चन्दा इकट्ठा करना होता था। मैं भी एक रसीद बुक लेकर उस सेठ के घर पहुँच गया और सेठ जी को दान देने के लिए कहा-सेठ जी बोले पहले दिया हुआ दान वापस करो फिर चन्दा दूँगा। मैं बोला कि वे रुपये तो खर्च हो गये। सेठ जी ने साफ-साफ मना कर दिया कि मैं चन्दा नहीं दूंगा और

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

उसके पीछे एक ही रट लगा रखी थी कि पहले दिया हुआ दान वापस करो - गुरु जी बोले कि मैं भी बैठ गया कि चन्दा तो लेकर ही जाऊँगा। दोपहर के बैठे-बैठे शाम हो गयी फिर रात हो गयी परन्तु सेठ जी ने चन्दा न दिया और मुझे नौकर से कहकर घर से बाहर निकलवा दिया। गुरु जी कहते हैं कि मैंने पूरी रात उस सेठ के द्वार पर बैठकर बितायी, क्योंकि मेरी भी जिद थी कि मैं चन्दा लेकर ही जाऊँगा। जब सुबह हुई और सेठ जी ने अपनी छत से बैठा हुआ देखा तो नौकर से पूछा कि यह वही व्यक्ति है जो कल चन्दा मांगने आया था। नौकर ने कहा - हाँ, वही व्यक्ति है और रात भर बाहर बैठा था। इतना होने के बाद सेठ जी अपने घर से बाहर आते हैं और चन्दा देकर कहते है कि यह लो चन्दा और पहला वाला दान भी मुझे वापस नहीं चाहिए।

यह संस्मरण गुरु जी के उस भाव को प्रकट करता है। जिससे हम लोग यह अनुमान लगा सकते हैं कि गुरु जी की दयानन्द तथा उनके कार्यों को करने में कितनी अटूट भक्ति थी कि रात भर उस सेठ के दरवाजे पर बैठे रहे और चन्दा लेकर ही लौटे।

गुरु जी ऐसे बहुत सारे संस्मरण हम लोगों को बीच-बीच में सुनाया करते थे, जिससे हममें भी एक नई ऊर्जा का सञ्चार होता था। मैं और भी बहुत कुछ भविष्य में गुरु जी से सीखना चाहता था परन्तु मेरी हालत उस भंवर के समान हो गयी जिसे नीतिकारों ने इस प्रकार प्रदर्शित किया था-

रात्रीर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्।
भास्वान उदेष्यति हषिष्यति पंकजश्री।
इत्थं विचिन्तयती कोशगते द्विरेफे।
हा हन्त! हन्त नलिनीं गज उज्जहार:॥

जाकिर हुसैन महाविद्यालय,
नई दिल्ली

मृत्यु से अभय

अकामो धीरो अमृत: स्वम्यम्भू रसेन तृप्तो न कुतश्चनोन:। तमेव विद्वान् न विभाय मृत्योरात्मानं धीरमजरं युवानम्।।

-अथर्ववेद

(अकाम:) निष्काम (धीर) धीर (अमृत:) अमर (स्वम्यम्भू) अपने आप वर्तमान (रसेन) रस से (तृप्त:) सन्तुष्ट (न) नहीं (कुतश्चन) कहीं से (ऊन:) न्यून (तम्) उसको (एव) ही (विद्वान्) जानता हुआ (न) नहीं (विभाय) डरता है (मृत्यु:) मृत्यु से (आत्मानम्) आत्मा को (धीरम्) धीर को (अजरम्) जरा रहित को (युवानम्) युवा को।

जीव स्वभाव से ही निष्काम, धीर, अमर, अपने आप वर्तमान परमात्मा के प्रेम से तृप्त है और इसमें किसी प्रकार की न्यूनता नहीं है। इसे ही आत्मा का धीर, जरा रहित तथा नित्य युवा जानता हुआ मनुष्य मृत्यु से भय नहीं करता।

That individual soul is desireless, firm, immortal, selfexistent, contented with the essence (of Divinlty) and lacking nothing (for it's Perfection). The man who knows the individual soul to be firm, undecaying and ever young does not fear death.

'ऋषिर्हिपूर्वजा अस्येक ईशान ओजसा' (ऋग्वेद-८.६.४१)

हे परमात्मन्! तू निश्चय सबका द्रष्टा और सबसे पहला (सनातन) है। अपने बल से सारे संसार का एक ही स्वामी है।

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

सामान्यज्ञान-दर्पणम्

❑ अङ्कित आर्य...✍

__नोट :__ यह __'सामान्यज्ञान-शिक्षणम्'__ नामक पाठ विद्यार्थियों की आगामी परीक्षाओं को ध्यान में रखकर शुरु किया गया है, ये प्रश्न विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं से अवतरित हैं।

प्र.१ कौन-सा तत्व सबसे कम सक्रिय होता है?

उ.- सीसा।

प्र.२ संविधान सभा के प्रारूप समिति में कुल कितने सदस्य थे?

उ.- सात सदस्य।

प्र.३ सबसे छोटा कोशिकीय अंग कौन-सा है?

उ.- राइबोसोम।

प्र.४ एक प्रकाश वर्ष कितनी दूरी के बराबर होता है?

उ.- ९.४६X१०^{2} किमी

प्र.५ ओलम्पिक मशाल किस पदार्थ से प्रज्ज्वलित की जाती है?

उ.- सूर्य की किरण से।

प्र.६ पदार्थ के संवेग और वेग के अनुपात से कौन-सी भौतिक राशि प्राप्त होती है?

उ.- द्रव्यमान।

प्र.७ संविधान सभा के झण्डा समिति के अध्यक्ष कौन थे?

उ.- जे. बी. कृपलानी।

प्र.८ लोहा एवं गंधक का मिश्रण कौन-सा मिश्रण है?

उ.- असमांग मिश्रण।

प्र.९ विश्व में सर्वप्रथम किस अंग का प्रत्यारोपण सम्भव हुआ?

उ.- हृदय का।

प्र.१० जनगणना की तर्ज पर मृत्यु गणना वाला पहला राज्य कौन-सा है?

उ.- कर्नाटक।

प्र.११ शिवाजी के मन्त्रिमण्डल को क्या कहा जाता है?

उ.- अष्टप्रधान।

प्र.१२ शिवाजी ने किस भाषा को राजभाषा बनाया?

उ.- मराठी को।

प्र.१३ 'जरणेतर मेला' किस राज्य का प्रसिद्ध मेला है?

उ.- गुजराज का।

प्र.१४ भारत का अन्तिम वायसराय था?

उ.- लॉर्ड माउंटबेटन।

प्र.१५ भारत की कौन-सी पंचवर्षीय योजना में खादी एवं ग्रामीण उद्योग आयोग की स्थापना की गयी थी?

उ.- द्वितीय पंचवर्षीय योजना में।

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm